जीवन सन्देश

खलील जिब्रान



सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

जीवन संदेश

व्यक्ति और समाज के लिए प्रेरक विचार

लेखक

खलील जिब्रान

•

परिचयकार

काकासा० कालेलकर

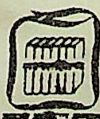
•

अनुवादक

हरिकृष्ण प्रेमी

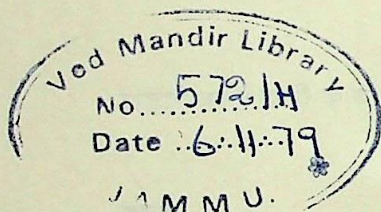
किशोरीरमण टण्डन

•



१९७८

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन



प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

•

छठी बार : १९७८

•

मूल्य : ३.५०

मुद्रक
अग्रवाल प्रिंटर्स,
दिल्ली-

प्रकाशकीय

खलील जिब्रान की अनेक पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित हो चुकी हैं और पाठक जानते हैं कि वह कितने प्रभावशाली लेखक और कलाविद् थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है और बड़ी आकर्षक शैली में अनेक जीवनोपयोगी बातें बताई हैं।

प्रस्तुत पुस्तक खलील जिब्रान की सर्वोत्कृष्ट मानी जानेवाली रचना 'दि प्रोफेट' का अनुवाद है। इसमें उन्होंने उन विषयों पर अपने विचार प्रकट किये हैं, जो हमारे जीवन से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। लेखक का दृष्टिकोण बहुत ही साफ है, इसलिए सूत्र रूप में व्यक्त किये जाने पर भी उनके विचारों में कहीं कोई उलझन नहीं है। कहीं-कहीं काव्य का रस भी मिलता है।

'जीवन-संदेश' हिंदी में बहुत लोकप्रिय हुई है। उसका छठा संस्करण उपस्थित करते हुए हमें बड़ा हर्ष अनुभव हो रहा है।

हमें पूरा विश्वास है कि पुस्तक को सभी वर्गों और सभी क्षेत्रों में पाठक चाव से पढ़ेंगे और यह संस्करण भी जल्दी ही समाप्त हो जायगा।

—मन्त्री

कवि और उनकी कृतियां

सन् १८८३ में सीरिया देश के माउंट लेबनान प्रांत के एक संपन्न एवं प्रतिष्ठित घराने में कवि खलील जिब्रान का जन्म हुआ था। वह बारह वर्ष की अवस्था में अपने माता-पिता के साथ बेल्जियम, फ्रांस और अमेरिका की सैर करने गये और दो वर्ष बाद लौटकर आये, तभी उन्हें बेरुत के अल-हिकमत मदरसे में दाखिल कराया गया, जहां उन्होंने अरबी साहित्य का गहरा अध्ययन किया। तभी वह अरबी में कविताएं भी लिखने लगे और थोड़े ही समय में उनकी गणना अरबी के महान् साहित्यकारों में होने लगी। सन् १९०३ में वह पुन: अमेरिका गये, जहां उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन शुरू किया। पांच वर्ष बाद वह फ्रांस चले आये, जहां उन्होंने चित्र-कला का अभ्यास किया। सन् १९१२ में वह फिर अमेरिका गये और जीवन के अंत तक न्यूयार्क में ही रहे।

अमेरिका में रहकर करीब १९१८ ई० से उन्होंने अंग्रेजी मे लिखना शुरू किया और तबसे उनकी ख्याति सिर्फ अंग्रेजी भाषा-भाषी जनता में ही नहीं, बल्कि अनुवाद द्वारा सारे संसार में फैल गई और अबतक करीब पच्चीस भाषाओं में उनकी पुस्तकों के अनुवाद हो चुके हैं।

उनकी तमाम पुस्तकें स्वयं उनके बनाये चित्रों से विभूषित हैं। उनकी चित्र-कला उनकी अपनी चीज है, जो गूढ़ होते हुए भी सजीव एवं एकरूप है। इन चित्रों का प्रदर्शन पश्चिमी जगत् के सारे देशों की राजधानियों में हो चुका है, जिनकी तुलना यूरोप के महान् चित्रकार रोडिन और विलियम ब्लेक से की जाती है।

उनकी अंग्रेजी पुस्तकों के नाम और प्रकाशन के वर्ष इस प्रकार हैं:



दि मैडमेन	१९१८
ट्वेंटी पिक्चर्स	१९१९
दि फ़ोररनर	१९२०
दि प्रोफ़ेट	१९२३
सैंड एण्ड फ़ोम	१९२६
जीसस, दि सन ऑव मैन	१९२८
दि अर्थ-गाड्स	१९३१
दि वांडरर	१९३२
दि गार्डन ऑव दि प्रोफ़ेट	१९३३

वैसे तो उपरोक्त सभी पुस्तकों का पूर्व तथा पश्चिम की कितनी ही भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, लेकिन वास्तव में 'दि प्रोफ़ेट' तो कवि की सर्वोत्कृष्ट रचना गिनी जाती है। उसका संसार की पच्चीस से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

इस महान् कवि, दार्शनिक एवं चित्रकार का देहांत ४८ वर्ष की अवस्था में १० अप्रैल, १९३१ को हो गया। यदि वह कुछ दिन और जीवित रहता तो उसकी और भी कितनी महान् रचनाओं से संसार लाभान्वित होता।

परिचय

विख्यात आयरिश कवि ए. ई. (जार्ज रसेल) ने खलील जिब्रान की तुलना हमारे रवींद्रनाथ ठाकुर से की है। जिस तरह श्री रवींद्रनाथ ठाकुर ने कालिदास के बारे में कवि गेटे के एक सुभाषित का विस्तार करते हुए तीन विश्वकवियों का सम्मेलन किया है, इसी तरह ए. ई. ने भी अपने उक्त अभिप्राय में वर्तमान काल के तीन सर्वोच्च चिंतकों का सम्मेलन किया है।

आयर्लैण्ड, आर्मिनिया और हिंद, तीनों देशों में एक-सी धारा क्यों बहती है, यह कहना कठिन है। ए. ई. का 'इंटरप्रेटर्स' खलील जिब्रान का 'दि प्रोफ़ेट' और रवींद्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' विश्व-साहित्य में अपना स्थान पा चुके हैं। रवींद्रनाथ ने प्रारंभ किया कविता से, किंतु आगे बढ़ते-बढ़ते वे सर्वांग परिपूर्ण चिंतक और समाज-हितैषी हो गये हैं। ए. ई. तो कवि भी थे, सामाजिक फ़िलसुफ़ भी थे और समाज-सेवक भी थे। खलील जिब्रान की आयु-धारा बहुत नहीं बही। पूरे पचास वर्ष भी उन्होंने इस दुनिया में पूरे नहीं किये, तो भी इतने में उन्होंने आर्मिनिया और पूर्व एशिया के नबियों की परंपरा हृदयंगत कर ली थी और अपनी काव्य-शक्ति से उसे जीवित कर दिया था। रवींद्रनाथ के साथ खलील जिब्रान का और भी एक साम्य है। साहित्यिक और चित्रकार भी बने, यह दुर्मिल सुमेल दोनों ने सिद्ध किया है। इसमें भी कुछ फर्क है। रवींद्रनाथ की चित्र-कला उनकी विभूति के जैसी ही विविध और अकल (अखंड) है। खलील जिब्रान की चित्रकला गूढ़ होते हुए भी एकरूप है।

ईश्वर ने भिन्न-भिन्न आकार में सौंदर्य की अभिव्यक्ति करते हुए पहेलूदार रत्न और चमकते सितारे बनाये, प्रसन्न फूल और घाटदार पत्ते बनाये, रसपूर्ण और आकर्षक फल बनाये, आकाश में उड़ते हुए पक्षी और चंचल

बादल भी बनाये। इस तरह से उसने सौंदर्य की अपार विविधता दिखाई। इतनी साधना पूरी करने के बाद अपनी परिपक्व कला से विधाता ने मनुष्य-शरीर का निर्माण किया। जब मनुष्य-शरीर में विकार-रहित, पाप-रहित प्रसन्नता प्रकट होती है तब मनुष्य-शरीर के सौंदर्य का उत्कर्ष चरम कोटि तक पहुंच जाता है। खलील जिब्रान इस मनुष्य-शरीर के सौंदर्य का, सौष्ठव का और लावण्य का एकनिष्ठ पुजारी है। जहां पवित्रता है, प्राकृतिक प्रसन्नता है, वहां कपड़ों की जरूरत नहीं है। जानवर कपड़े नहीं पहनते हैं, इसलिए वे भद्दे नहीं दीख पड़ते हैं। पक्षी अपने प्राकृतिक शरीर को ढंक देने की कोई कोशिश नहीं करते हैं, इसलिए वे अश्लील नहीं दीख पड़ते हैं। फूलों के पास उनका कोई भी अंग गोपनीय नहीं होता है। उनका परस्पर मिलन भी गुप्त न होकर किसी महोत्सव का रूप धारण करता है। मनुष्य के छोटे-छोटे बच्चे भी अपनी निर्व्याज सरलवृत्ति से कमनीयता, प्रसन्नता और पवित्रता को ऐसा कुछ रसायन बना देते हैं कि उनकी प्राकृतिक अवस्था देखते ही हमारा हृदय कोमल, उन्नत और संस्कार-संपन्न बन जाता है। मनुष्य के नग्न शरीर में फूल-फूल की और पशुपंखी की निर्व्याज मनोहरता और पवित्रता अर्पण करने की शक्ति खलील जिब्रान में जैसी है वैसी रोडिन में है या नहीं, यह कहना कठिन है।

खलील जिब्रान बलिष्ठ कल्पना-शक्ति का कवि है। एक से अधिक भाषा का शब्द-स्वामी है। गद्यकाव्य की एक नई शैली का निर्माता है। मनुष्य-हृदय का कुशल परिचायक है।

इतना होते हुए भी उसका सच्चा परिचय तो ज्ञानी या सूफी शब्द से ही हम कर सकते हैं। प्राचीनकाल के नबी जब कभी जीवन-रहस्य का उपदेश करते थे तब वे लोक-कथाओं का उपजीवन करके दृष्टांत और रूपक की ही भाषा में बोलते थे। खलील जिब्रान ने भी अपने 'मैडमेन' (पागल)[१] में और 'वांडरर' (बटोही)[२] में फूलों जैसे नाजुक और प्रेम-जैसे हृदय-वेधक दृष्टांत

१-२ इन दोनों का अनुवाद 'पागल' और 'बटोही' के नाम से प्रकाशित हुआ है।

ही इकट्ठे किये हैं। ज्ञानी और सूफी जब बोलते हैं तब बादाम-मिश्री के जैसे मिष्ट और पौष्टिक सुभाषित ही दुनिया के सामने धर देते हैं। खलील जिब्रान तो सुभाषितों का अप्रतिम रत्नाकर है। उसके 'सेंड एण्ड फोम' में उसने सुभाषितों की रत्न-माला बनाई है, उसे पढ़ते ही रवींद्रनाथ ठाकुर के 'फ़ायर फ़्लाईज़' की ही याद आती है।

निरंकुश कविता की ज्वालाएं अगर देखनी हों तो खलील जिब्रान का 'अर्थ-गाड्स' पढ़ना चाहिए। पढ़ते ऐसा प्रतीत होता है कि कहां से ये सब, ये दृष्टियां और यह विरूप अभिरुचि कवि-हृदय में आ बसी हैं। देव और दानव, तूफान और संहार सबका मानो ताण्डव-नृत्य विश्व के रंगमंच पर चल रहा है और भगवान स्वयं उसका आस्वाद ले रहे हैं और कवि को उसका ताल पकड़ने को प्रेरित कर रहे हैं।

सिर्फ एक ही किताब में खलील ने ज़मीन पर उतरना कबूल किया है, किंतु उसमें भी उसकी प्रतिभा ने अपने ही ढंग का रास्ता निकाला है। ईसामसीह की अपनी एक निजी आवृत्ति तैयार करने का खलील का विचार हुआ होगा। उसने ईसा के समकालीन अनेक लोगों को बुला-बुलाकर उनको अपना-अपना बयान देने को बाध्य किया है। हमारे मैथिलीशरण ने जिस तरह अपने 'द्वापर' में भिन्न-भिन्न लोगों से अपने हृदय के भाव व्यक्त करवाये हैं उसी तरह जिब्रान ने भी पायलेट की स्त्री, पर्शिया का फ़िलसुफ़, सामान्य मेग्डेलिन आदि अनेकों के मुंह से ईसा के बारे में अपनी-अपनी क्या राय थी, अपना-अपना क्या अभिप्राय था, सबकुछ बुलवाया है।

प्रस्तुत 'दि प्रोफ़ेट' (जीवन-संदेश) में खलील जिब्रान ने अपना विचार-सर्वस्व डाल दिया है और उसमें जो कुछ बाकी रहा था, जिसे व्यक्त किये बिना खलील से रहा नहीं जाता था, वह उसने परिशिष्ट के रूप में अपने 'दि गार्डन ऑव दि प्रोफ़ेट' (गुरु का बाग़) में भर दिया है। तब ही जाकर वह कहीं बादल के जैसा पतला विरल होकर विश्वाकाश में विलीन हो गया।

लोगों को यह किताब जितनी अच्छी लगती है, उतनी 'गुरु का बाग़'

अच्छी नहीं लगती और इसमें आश्चर्य भी नहीं है। 'जीवन-संदेश' में जीवन-स्मृति है, जबकि 'गुरु का बाग' में जीवन-रहस्य और जीवन-काव्य भी ठसाठस भरा है। उसके लिए दिल और दिमाग की पाचनशक्ति कुछ और किस्म की चाहिए।

'जीवन-संदेश' में कवि ने एक नाम-मात्र कथा का निर्माण करके उसके धागे पर जीवन के भिन्न-भिन्न पहलू पर प्रकाश डालनेवाले अपने विचार और जीवन-सिद्धांत पिरो दिये हैं। ये हैं उसके विषय—प्रेम, विवाह, बालक, क्रय-विक्रय, खान-पान, श्रम, हर्ष और शक्ति, अपराध और दंड, घर, वस्त्र, विवेक और वासना, कानून, स्वतंत्रता, अध्ययन, आत्म-ज्ञान भलाई और बुराई, सुंदरता, मृत्यु, धर्म, आदि-आदि।

स्पष्ट है कि कवि को एक नया हृदय-धर्म चलाना है। उसकी अपनी एक दृष्टि निश्चित हो चुकी है। उसीका विनियोग जीवन के अंग-प्रत्यंग में कराके एक नवीन मानवता वह तैयार कर रहा है। इस किताब का आकर्षण मुख्यतया वही है। पूरा ग्रंथ पढ़ने के बाद मनुष्य के मन में संतोष होता है कि सचमुच हमें एक दिव्य दृष्टि मिली है।

इससे अधिक इस ग्रंथ का परिचय देना उसको यहां दोहराना है। इतने थोड़े में, इतनी विशद शैली में, जीवन का विधान और भविष्य के लिए नव-निर्माण शायद ही किसी अन्य ग्रंथ में किया गया होगा।

—काका कालेलकर

अनुक्रम

जीवन-संदेश

जीवन-संदेश

: १ :

महाप्रस्थान

अलमुस्तफा[१] उसका नाम था।

प्रभु ने उसे अपनाया और स्नेह-भाजन बनाया था।

वह अपने समय में प्रकाश का अग्रदूत था।

बारह वर्ष तक उसने आरफालीज[२] नगर में उस जहाज की प्रतीक्षा की थी, जो उसे वापस जन्म-भूमि[३] को ले जाने-वाला था।

बाहरवें वर्ष ईलूल[४] महीने की सातवीं तारीख को, जब कि फसलें काटने के दिन थे, वह शहर के बाहर की टेकरी पर चढ़ा और उसने समुद्र की ओर निगाह डाली।

वहां उसे अपना जहाज[५] कोहरे के साथ आता नजर आया।

उसके हृदय के द्वार खुल पड़े और उसका आनंद पंख फड़फड़ाकर समुद्र में दूर तक फैल गया।[६]

---

[१] अरबी भाषा का एक आदर-वाचक शब्द। [२] मृत्यु-लोक [३] परलोक। [४] सीरिया देश में प्रचलित संवत् का एक महीना [५] मृत्यु का समय। [६] ज्ञानी को मृत्यु भय का नहीं आनंद का कारण है।

फिर उसने आंखें मूंद लीं और अंतरात्मा की अनंत शांति में डूबकर ईश्वर की आराधना की।

पर जैसे ही वह टेकरी से उतरने लगा, उसपर उदासी के बादल छा गए। वह सोचने लगा—

कैसे मैं यहां से पूरी शांति से, बिना जरा भी वेदना अनुभव किये, जा सकूंगा ? नहीं, मैं अपनी भावनाओं पर घाव सहे बिना, इस शहर को नहीं छोड़ सकूंगा।

दर्द-भरे लंबे-लंबे[1] दिन और सूनेपन से भरी हुई रातें, इस शहर की दीवारों के भीतर, मैंने बिताई हैं। कौन अपने दर्द और सूनेपन से, बिना व्यथित हुए, विदा ले सकता है ?

इन गलियों में मैंने भावनाओं के अनंत कण बिखराए हैं। मेरी लालसाओं के असंख्य बालक इन टेकरियों पर नंगे घूम रहे हैं। इनकी स्मृति का भार और दर्द साथ में ले जाए बिना मैं यहां से विदा नहीं ले सकूंगा।

यह कोई पहनने का कपड़ा तो है नहीं, जिसे मैं उतारकर फेंके जा रहा हूं; यह तो मेरी अपनी देह का चमड़ा है जिसे अपने ही हाथों उतार रहा हूं।

आज जिसे पीछे छोड़े जा रहा हूं, वह केवल एक कल्पना ही नहीं है, बल्कि एक ऐसा हृदय है जिसे भूख और प्यास ने मधुर बनाया है।

फिर भी अब मैं विलंब नहीं कर सकता।

समुद्र[2]—जो सभीको अपनी ओर बुलाता है—मुझे भी

[1] प्रभु-वियोग के कारण। [2] काल

वुला रहा है। अब मुझे भी प्रस्थान करना ही पड़ेगा।

जब काल के पंख रात की ज्वाला से जल रहे हैं, तब ठहरे रहना तो बर्फ बन जाना, पत्थर हो जाना और निर्जीवता के बंधन में बंध जाना है।[1]

जी तो करता है कि यहां का सब-कुछ अपने साथ ले जाऊं। लेकिन यह कैसे हो सकता है ?

शब्द, जो जिह्वा और ओठों से पंख पाता है, उन्हें भी अपने पंखों पर उड़ाकर नहीं ले जा सकता। उसे तो अकेले ही प्रकाश के छोर नापने पड़ते हैं।

अपने घोंसले को यहीं छोड़कर गरुड़ को बिलकुल अकेला ही सूर्य की ओर उड़ना पड़ता है।

टेकरी की तलहटी में पहुंचते ही उसने समुद्र की ओर मुंह फेरा और देखा कि उसका जहाज बंदर के निकट पहुंच रहा है, जिसके अगले भाग पर मल्लाह--उसके वतन के लोग--बैठे हुए थे।

उसकी आत्मा से उनके लिए पुकार उठी--मेरी सनातन मां की संतानो ! ओ समुद्र की तरंगों और तूफान पर सवारी करनेवालो ! !

न जाने कितनी बार तुमने मेरे स्वप्नों में जहाज चलाये हैं। और अब तुम मेरी जागृति में आये हो, जो मेरा और भी गहरा सपना है।

---

[1] समय आने पर प्राणी का मृत्यु से छुटकारा पाने का प्रयत्न चारों ओर बरफ के बीच आग जलाकर जीवन-रक्षा करने के प्रयत्न-सा है।

चलने के लिए मैं तैयार खड़ा हूं। और मेरी उत्कंठा के मुक्त पाल पवन की प्रतीक्षा में हैं।

केवल एक श्वास इस स्थिर वायु में और लूंगा, केवल एक चाह-भरी निगाह पीछे और डालूंगा।

उसके बाद मैं खड़ा हूंगा तुम्हारे बीच--तुम समुद्र के यात्रियों में समुद्र का यात्री बनकर।

ओ विराट समुद्र, निद्रा-लीन मां, जो नदियों और निर्झरों के लिए एकमात्र शांति और मुक्ति है! यह झरना एक बार और मोड़ खायगा, इस वन-वीथिका में एक और कलरव करेगा—और तब मैं तुम्हारे पास आ पहुंचूंगा—

एक असीम बिंदु सीमाहीन सिंधु की गोद में।[1]

जैसे ही वह मुड़ा, उसने देखा कि दूर-दूर से दल-के-दल स्त्री-पुरुष अपने खेत, खलिहान और द्राक्ष-कुंजों को छोड़-छोड़कर नगर-द्वार की ओर जल्दी-जल्दी बढ़े आ रहे हैं।

उसने सुना कि वे उसका नाम ले रहे हैं। खेत-खेत, पुकार-पुकारकर एक-दूसरे से उसके जहाज के आने की बात कर रहे हैं।

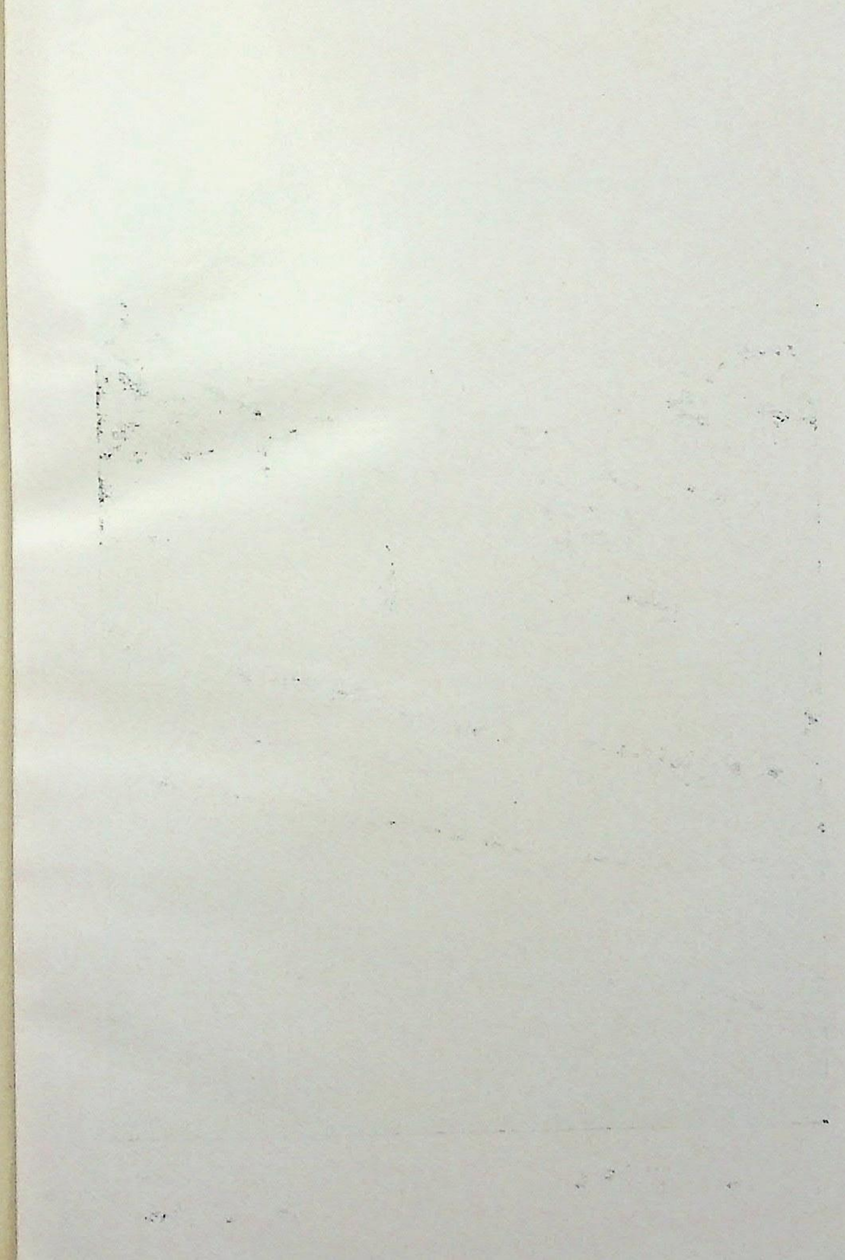
तब उसने अपने-आपसे कहा :

क्या यह विदा-वेला जमघट लगने का अवसर बनेगी?

और क्या यह कहा जायगा कि मेरी संध्या ही वास्तव में मेरी उषा थी?

---

[1] जीव चैतन्य का बिंदु है। ईश्वर समुद्र है। दोनों ही चैतन्य रूप हैं, इसलिए दोनों अनंत हैं।





उन्हें मैं क्या भेंट दूं, जो हलों को भूमि में अधगड़े ही छोड़कर, अथवा अंगूर का रस निकालनेवाले कोल्हुओं को अधबीच में पटककर मुझसे मिलने दौड़ पड़े हैं ?

क्या मेरा हृदय फलों के भार से झुका हुआ वृक्ष बनेगा, जिसके फल तोड़-तोड़कर मैं उनमें बांट सकूं ?

क्या मेरी अभिलाषाएं जल-स्रोत की तरह फूटकर बह पड़ेंगी, ताकि मैं उनके प्याले भर सकूं ?

क्या मैं वह वीणा हूं जिसे सर्वशक्तिमान् का स्पर्श मिल सके, या वह बांसुरी हूं जिसमें से उसकी सांस गुजर सके ?

मैं तो केवल मौन का साधक रहा हूं; और उस मौन में मुझे ऐसा क्या खजाना मिला है जो मैं विश्वास के साथ लुटा सकूं ?

यदि यह मेरा फसल काटने का समय है तो कोई बताये कि किन खेतों में बीज बोये थे--किन भूली हुई ऋतुओं में बोये थे ?

वास्तव में यदि मेरे दीपक को ऊंचा उठाने का समय आ पहुंचा है, तो निश्चय ही मुझमें वह ज्योति नहीं है जो इसमें जलेगी।

अपना रीता और अनजला दीया ही मैं ऊपर उठाऊंगा। निशानाथ स्वयं ही इसे स्नेह से भरेंगे। वह इसे चेताएंगे।[1]

इतने विचारों को तो उसने वाणी दी लेकिन बहुत-कुछ उसके हृदय के अव्यक्त ही रह गया, क्योंकि वह स्वयं ही

[1] अब मुझे क्या कहना है, इसका मुझे ज्ञान नहीं। वह स्वयं मेरी वाणी बनेगा।

अंतरतर के गुह्यतर रहस्य को शब्द प्रदान करने में असमर्थ था।

जैसे ही उसने नगर में प्रवेश किया, सभी नगर-निवासी उससे मिलने के लिए आये। सब एक स्वर से उसे पुकार रहे थे।

पहले नगर के बड़े-बूढ़े सामने आकर बोले :

तुम अभी हमें छोड़कर न जाओ।

तुम हमारी संध्या के धुंधले प्रकाश में दोपहर का ज्वार बनकर रहे हो और तुम्हारी जवानी ने हमें स्वप्न देखने के सपने दिये हैं।[1]

तुम हमारे बीच कोई अजनबी अथवा अतिथि नहीं हो, बल्कि हमारे लाड़ले पुत्र हो।

अभी से हमारी आंखों को अपने दर्शन की प्यास से मत तड़पाओ।

इसके बाद साधु-साध्विओं ने उससे कहा :

अभी समुद्र की तरंगों को हममें बिछोह न डालने दो और तुमने हमारे बीच जो घड़ियां बिताई हैं, उन्हें केवल स्मृति का विषय न बना जाओ।

तुम हमारे बीच स्फूर्ति बनकर घूमे हो और तुम्हारी छाया हमारे मुखों पर प्रभा बनकर रही है।

हमने तुमसे अत्यधिक प्रेम किया है, किंतु वह प्रेम नीरव

---

[1] संध्या—अज्ञान की। दोपहर—ज्ञान की। जवानी—उत्साह, ज्ञान। स्वप्न—उच्च अभिलाषाएं। हम अज्ञान और निराशा से घिरे हुए थे। आपने ज्ञान और आशा से परिपूर्ण किया था।

था और उसे परदों से ढक रखा था ।

लेकिन आज वह तुम्हारे सामने चीख पड़ा है और तुम्हारे सामने बे-पर्द खड़ा है ।

कारण, यह सनातन सत्य है कि प्रेम अपनी गहराई को वियोग की घड़ी आ पहुंचने के पहले तक स्वयं नहीं जानता ।

और लोग भी आये और उन्होंने भी उसकी मनुहार की, किंतु उसने कुछ उत्तर नहीं दिया, केवल अपना सिर झुका लिया ।

जो समीप खड़े थे उन्होंने उसकी छाती पर टपकते हुए आंसू देखे ।

इसके बाद वह तथा अन्य सभी लोग मंदिर के सामनेवाले चौक की तरफ बढ़े ।

तब उस मंदिर में से एक स्त्री बाहर आई । उसका नाम था अल्मित्रा । वह ब्रह्मवादिनी थी ।

उसने उसकी ओर बड़ी कोमल दृष्टि से देखा, क्योंकि जब उसे उनके नगर में आये केवल एक ही दिन हुआ था, तब पहले-पहल इसी महिला ने उसे समझा और उसमें विश्वास किया था ।

उसने यह कहते हुए उसका अभिनंदन किया :

ओ प्रभु के पैगंबर ! अनंत के साधक ! चिरकाल से तुम अपने जहाज के लिए दूर-दूर तक खोज करते रहे हो ।

अब तुम्हारा जहाज आ पहुंचा है, और अब तुम्हारा जाना जरूरी हो गया है ।

तुम्हारे स्मृतियों के देश और तुम्हारी महत्तर अभिलाषाओं

के आश्रय-स्थान के लिए तुम्हारी चाह बहुत गहरी है। हमारा प्रेम तुम्हारा बंधन नहीं बनेगा, न हमारी आवश्यकताएं तुम्हें पकड़ रखेंगी।

फिर भी हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि हमको छोड़कर जाने के पहले तुम हमें अपने अमृत-वचन सुनाओ, और अपने सत्य के भण्डार में से कुछ हमें प्रदान करो।

वह सत्य हम अपनी संतानों को देंगे, और वे अपनी संतानों को। और वह अमर रहेगा।

अपने एकांत में तुमने हमारे दिनों का निरीक्षण किया है, और अपनी जागृति में हमारी निद्रा का रुदन और हास्य सुना है।[1]

अतएव अब तुम हमें हमारा ही परिचय दो। जीवन और मरण के बीच जो कुछ है, उसके विषय में तुमने जो जान पाया है, वह हमें भी बताओ।

उसने उत्तर दिया :

हे आरफालिज-वासियो, मैं तुम्हें क्या कह सकता हूं, सिवा उन बातों के, जो इस समय भी तुम्हारे प्राणों में मचल रही हैं?

---

[1] हमारी अज्ञान-अवस्था में हमें जो हर्ष-शोक हुए हैं।

: २ :

प्रेम

तब अल्‌मित्रा ने कहा :

हमसे प्रेम के विषय में कुछ कहो।

तब उसने अपना मस्तक ऊंचा किया और लोगों पर दृष्टि डाली। सबपर शांति छा गई और गुरु-गंभीर स्वर से उसने कहा :

जब प्रेम तुम्हें अपनी ओर बुलाये तो उसका अनुगमन करो, यद्यपि उसकी राहें विकट और विषम हैं।

जब उसके पंख तुम्हें ढक लेना चाहें, तो तुम आत्मसमर्पण कर दो,

भले ही उन पंखों के नीचे छिपी तलवार तुम्हें घायल करे।

और जब वह तुमसे बोले तो उसमें विश्वास रक्खो,

भले ही उसकी आवाज तुम्हारे स्वप्नों को चकनाचूर कर डाले, जिस तरह झंझावात उपवन को उजाड़ डालता है।

क्योंकि प्रेम जिस तरह तुम्हें मुकुट पहनायेगा उसी तरह शूली पर भी चढ़ायेगा। जिस तरह वह तुम्हारे विकास के लिए है, उसी तरह तुम्हारी काट-छांट के लिए भी।

जिस प्रकार वह तुम्हारी ऊंचाइयों तक चढ़कर सूर्य की किरणों में कांपती हुई तुम्हारी कोमलतम कोंपलों की भी देख-भाल करता है,

उसी प्रकार वह तुम्हारी नीचाइयों तक उतरकर, भूमि में दूर तक गड़ी हुई, तुम्हारी जड़ों को भी झकझोर डालता है।

अनाज की बालों[1] की तरह वह तुम्हें अपने अंदर भर लेता है।

तुम्हें नंगा करने के लिए कूटता है।

तुम्हारी भूसी दूर करने के लिए तुम्हें फटकता है।

तुम्हें पीसकर श्वेत बनाता है।

तुम्हें नरम बनाने तक गूंधता है;

और तब तुम्हें अपनी पवित्र अग्नि पर सेंकता है जिससे तुम प्रभु के पावन-थाल की पवित्र रोटी बन सको।

प्रेम तुम्हारे साथ यह सारी लीला इसलिए करता है कि तुम अपने अंतरतम के रहस्यों का ज्ञान पा सको, और उसी ज्ञान द्वारा जगज्जीवन के हृदय का एक अंश बन सको।

लेकिन यदि भयवश तुम केवल प्रेम की शांति और प्रेम के उल्लास की ही कामना करते हो,

तो, तुम्हारे लिए यही भला है कि तुम अपनी नग्नता

---

[1] जिस तरह गेहूं की बालों में गेहूं के दाने, मक्का के भुट्टे में मक्का के दाने भरे रहते हैं।

को ढक लो और प्रेम की कूटनेवाली खलिहान से बाहर हो जाओ।

और ऋतु-हीन[1] संसार में जा बसो, जहां तुम हँसोगे तो, लेकिन पूरी हँसी नहीं, जहां तुम रोओगे तो, लेकिन सारे आंसुओं के साथ नहीं।

प्रेम किसीको अपने-आपके सिवा न कुछ देता है, न किसी-से अपने-आपके सिवा कुछ लेता है।

प्रेम न किसीका स्वामी बनता है, न किसीको अपना स्वामी बनाता है।

क्योंकि प्रेम प्रेम में ही परिपूर्ण है।

जब तुम प्रेम करो तब यह न कहो--'ईश्वर मेरे हृदय में है।' बल्कि कहो--'मैं ईश्वर के हृदय में हूं।'

और कभी न सोचना कि तुम प्रेम का पथ निर्धारित कर सकते हो, क्योंकि प्रेम यदि तुम्हें अधिकारी समझता है तो स्वयं तुम्हारी राह निर्धारित करता है।

प्रेम अपने-आपको संपूर्ण करने के सिवा और कुछ नहीं चाहता।

यदि तुम प्रेम करो और तुम्हारे हृदय में कामनाएं उठें ही तो वे ये हों:

मैं द्रवित हो सकूं--बहते हुए झरने की तरह रजनी को सुमधुर गीत से भर सकूं।

[1] परिवर्तन-हीन, जीवन-हीन।

अत्यंत कोमलता की वेदना मैं अनुभव कर सकूं।

अपने प्रेम की अनुभूति से मैं घायल हो सकूं।

अपनी इच्छा से और हंसते-हंसते मैं अपना रक्त-दान कर सकूं।

पंख फैलाता हुआ हृदय लेकर प्रभात-वेला में जाग सकूं और एक और प्रेममय दिन पाने के लिए धन्यवाद कर सकूं।

दोपहर को विश्राम कर सकूं और प्रेम के परम आनंद में तल्लीन हो सकूं।

दिन ढलने पर कृतज्ञता-भरा हृदय लेकर घर लौट सकूं;

और फिर रात्रि में हृदय में प्रियतम के लिए प्रार्थना और ओठों पर उसकी प्रशंसा का गीत लेकर सो सकूं।

: ३ :

विवाह

और इसके बाद अल्मित्रा ने फिर सविनय पूछा :

और विवाह के विषय में, महात्मन् ;

उसने उत्तर दिया :

तुम दोनों[1] एक साथ जन्मे थे और सदा साथ-साथ ही रहोगे।

जिस समय मृत्यु के श्वेत पंख तुम्हारे जीवन की घड़ियों को बिखेर देंगे, उस समय भी तुम साथ-साथ ही होगे।

सत्य ही, प्रभु की प्रशांत स्मृति में भी तुम दोनों का स्थान एक साथ ही होगा।

फिर भी अपनी अनन्यता में कुछ अवकाश भी रहने दो,

और तुम दोनों के बीच स्वर्ग के समीरण को नृत्य करने दो।

एक-दूसरे से प्रेम करो, लेकिन प्रेम को बंधन न बनने दो,

बल्कि उसे अपनी आत्माओं के किनारों के बीच तरंगित समुद्र बनने दो।

---

[1]दंपति।

एक- दूसरे का प्याला भरो, लेकिन एक ही प्याले से मत पियो।

एक-दूसरे को अपने भोजन में से भाग दो, लेकिन एक ही रोटी में से दोनों मत खाओ।

साथ-साथ गाओ, नाचो, हर्षोन्मत्त होओ, फिर भी एक-दूसरे को एकांत पाने दो;

जिस तरह वीणा के तार एक ही राग में कंपित होते हुए भी अलग-अलग हैं।

हृदयों को अर्पित करो, लेकिन एक-दूसरे के संरक्षण में मत रखो।

क्योंकि, केवल जीवन की मुट्ठी में ही तुम्हारे हृदय समा सकते हैं।

और तुम साथ-साथ खड़े होओ, लेकिन एक-दूसरे के बहुत ही निकट नहीं।

क्योंकि मंदिर के स्तंभ अलग-अलग खड़े हैं।

और बलूत तथा सरों एक-दूसरे की छाया में नहीं बढ़ते।

: ४ :

बालक

इसके बाद एक युवती, जो एक नन्हें बालक को छाती से लगाये थी, बोली :

हमसे बालकों के विषय में कुछ कहो।

और उसने कहा :

तुम्हारे बालक तुम्हारे अपने बालक नहीं हैं।

वे जीवन की—जन्म लेने की—लालसा की संतानें हैं।

वे तुम्हारे द्वारा आते हैं, लेकिन तुममें से नहीं,

और यद्यपि वे तुम्हारे साथ हैं, फिर भी वे तुम्हारे नहीं हैं।

तुम इन्हें अपना प्रेम भले ही दो, लेकिन अपने विचार मत दो,

क्योंकि उनके अपने विचार हैं।

तुम उनके शरीरों को भले ही घर में रखो, लेकिन उनकी आत्माओं को नहीं,

क्योंकि उनकी आत्माएं भावी के भवन में रहती हैं, जहां तुम नहीं पहुंच सकते—स्वप्न में भी नहीं।

तुम उनके सदृश होने का प्रयत्न भले ही करना, लेकिन उन्हें अपने अनुरूप बनाने की चेष्टा न करना,

क्योंकि जीवन पीछे की ओर नहीं जाता, और न बीते हुए कल के साथ रुकता है।

तुम वे धनुष हो, जिससे तुम्हारे बालक-रूपी जीवित बाण छोड़ जाते हैं।

वह धनुर्धर अनंत के पथ पर निशाना ताकता है, और तुम्हें अपनी महत् शक्ति से झुकाता है कि उसके तीर द्रुत-गति से दूर तक जा सकें।

उस धनुर्धर के हाथों तुम्हारा यह झुकाया जाना आनंद के लिए हो।

क्योंकि जिस प्रकार वह उड़कर जानेवाले बाण को प्यार करता है, उसी प्रकार वह उस धनुष को भी, जो स्थिर है।

: ५ :

दान

तब एक धनवान व्यक्ति ने कहा :

हमसे दान के संबंध में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

जब तुम अपनी संपत्ति में से कुछ देते हो, तो देते हो सही, लेकिन 'नहीं' के बराबर।

जब तुम अपने-आप में से देते हो, तब वास्तव में दान करते हो।

कारण, यह संपत्ति है क्या ? केवल कुछ चीजें जिन्हें तुम, इस भय से कि इनकी कल[1] तुम्हें जरूरत पड़ सकती है, संचित करते हो और जिनकी रखवाली करते हो।

और कल ? कल उस अति सयाने कुत्ते को क्या देगा जो चिन्ह-रहित रेत में स्थान-स्थान पर हड्डियां गाड़ता तीर्थ-यात्रियों के दल का अनुगमन करता है।

और अभाव का भय क्या है, स्वयं अभाव ही तो।

जब तुम्हारा कुंआ भरपूर है, तब भी तुम्हें प्यास का डर क्या स्वयं ऐसी प्यास[2] नहीं है जिसका बुझाना असंभव है ?

---

[1] भविष्य में। [2] तृष्णा।

कई ऐसे लोग भी हैं जो अपने विपुल संग्रह में से थोड़ा-सा दान देते हैं, और इसलिए देते हैं कि उनका नाम हो। और यह गुप्त वासना उनके दान को अशिव बना देती है।

और ऐसे लोग भी हैं जिनके पास थोड़ा ही है, लेकिन वे सब-कुछ दे डालते हैं।

ये ही लोग हैं जो जीवन में विश्वास करते हैं और जीवन की उदारता में भी, और इनके खजाने कभी खाली नहीं होते।

ऐसे भी लोग हैं जो उल्लासपूर्वक देते हैं, और उल्लास ही उनके लिए पुरस्कार है।

और ऐसे भी लोग हैं जो कष्टपूर्वक देते हैं, और यह कष्ट ही उनके लिए दीक्षा[1] है।

और ऐसे भी लोग हैं जो देते हैं, लेकिन देने में कष्ट अनुभव नहीं करते, न वे उल्लास की अभिलाषा करते हैं, और न पुण्य समझकर ही कुछ देते हैं।

वे देते हैं, जिस प्रकार विजन का फूल दशों दिशाओं में अपना सौरभ लुटा देता है।

इन्हीं लोगों के हाथों द्वारा ईश्वर बोलता है और इन्हींकी आंखों में से वह पृथ्वी पर अपनी मुस्कान छिटकाता है।

मांगने पर देना अच्छा है, लेकिन, आवश्यकता अनुभव करके, बिना मांगे देना और भी अच्छा है।

मुक्त-हस्त व्यक्ति के लिए दान देने की अपेक्षा दान लेनेवाले की तलाश में अधिक आनंद है।

---

[1] उन्हें शिक्षा देता है।

और तुम्हारे पास ऐसा है ही क्या जिसे तुम रखे रह सकते हो ?

जो कुछ तुम्हारे पास है, सब एक दिन दिया ही जायगा।

इसलिए अभी दे डालो, ताकि दान देने का मुहूर्त्त तुम्हारे वारिसों को नहीं, तुम्हें ही प्राप्त हो जाय।

तुम प्रायः कहते हो, "मैं दान दूंगा, किंतु सुपात्र को ही।"

तुम्हारी वाटिका के वृक्ष ऐसा नहीं कहते, न तुम्हारे चारागाह की भेड़ें।

वे देते हैं, ताकि जी सकें, क्योंकि रखे रहना ही मृत्यु है।

अवश्य ही, जो दिवस और रात्रियों का दान पाने का अधिकारी है, वह तुमसे शेष सभी कुछ पाने का अधिकारी है।

उससे बड़ा रेगिस्तान[१] और क्या होगा जो दान लेने के साहस, विश्वास, नहीं—औदार्य में है।

और तुम हो ही कौन कि मानव तुम्हारे सामने अपनी छाती खोले ? और स्वाभिमान को बे-पर्द करे, ताकि तुम पात्रता को नग्न और आत्म-गौरव को निर्लज्ज स्थिति में देख सको।

पहले यह देखो कि तुम स्वयं दाता बनने या दान देने का साधन बनने के योग्य हो भी।

कारण, वस्तुतः जीवन ही जीवन को देता है, और तुम जो अपने-आपको दाता मान बैठते हो, केवल एक गवाह हो।

और तुम लेनेवालो—और तुम सभी लेनेवाले हो[२]—अपने

---

[१] जिसने मांगने का साहस किया है वह निश्चय ही अभावग्रस्त है। [२] वास्तव में संसार का प्रत्येक प्राणी प्रभु के आगे भिखारी के रूप में है।

ऊपर कृतज्ञता का बोझ न लो, अन्यथा तुम अपने ऊपर जुआ लादोगे और अपने दाता पर भी;

बल्कि दाता-सहित तुम भी उसके उपहारों पर ऊपर उठो, मानों पंखों पर उड़ रहे हो।

क्योंकि अपने ऋण का आवश्यकता से अधिक ध्यान रखना उसकी दानशीलता पर संदेह करना है, जिसे पृथ्वी जैसी उदार माता और ईश्वर जैसा महान् पिता उपलब्ध है।

: ६ :

खान-पान

इसके बाद एक बूढ़ा सरायवाला बोला :

हमसे खाने-पीने के विषय में भी कुछ कहो।

तब वह बोला :

काश तुम पृथ्वी की सुवास पर निर्भर और अमर-बेल[1] की भांति केवल किरणों पर जीवित रह सकते।

लेकिन क्योंकि पेट भरने के लिए तुम्हें हिंसा करना और प्यास बुझाने के लिए नवजात बछड़े से उसकी मां का दूध लूटना ही पड़ता है, तो वह कार्य प्रभु की पूजा के रूप में करो।

और अपने भोजन के थाल को बलिवेदी समझो जिसपर जंगल और मैदान के शुद्ध और निर्मल जीवन की उसके लिए बलि दो जो मानव में विशेष शुद्ध और विशेष निर्मल है।

किसी जीव को हलाल करते समय उससे अपने मन में कहो :

"जो शक्ति तुम्हारा वध कर रही है, उसीने मुझे भी मार

[1] अमरबेल एक लता है, जो वृक्षों पर छत की तरह छाई रहती है। भूमि में उसकी जड़ नहीं होती, फिर भी वह हरी रहती है।

रखा है, और मुझे भी खाया जायगा।

"क्योंकि जिस कानून ने तुम्हें मेरे हाथों में सौंपा है, वही मुझे भी और अधिक शक्तिशाली हाथों में सौंपेगा।

तुम्हारा रक्त और मेरा रक्त उस रस के अतिरिक्त और कुछ नहीं है जो विश्व-वृक्ष का पोषण करता है।"

और जब दांतों से किसी सेव को चबाओ तो उससे अपने मन में कहो :

"तुम्हारे बीज मेरे शरीर में जियेंगे।

"और तुम्हारे कल की कलियां मेरे हृदय में खिलेंगी।

"और तुम्हारी सुगंधि मेरा श्वास होगी।

"और हम दोनों मिलकर सब ऋतुओं में आनंद लूटेंगे।"

और फसल के समय जब तुम द्राक्ष-कुंज के अंगूरों को कोल्हू में डालने के लिए जमा करो तो अपने हृदय में कहो :

"मैं भी एक द्राक्ष-कुंज हूं और मेरे फल कोल्हू में पेरे जाने के लिए जमा किये जायंगे।

"और नई मदिरा के समान मुझे अवनाशी घरों में बंद रखा जायगा।"

और शीत-काल में जब तुम शराब खींचो, तब शराब के प्रत्येक प्याले के लिए तुम्हारे हृदय में गीत स्फुरित हो।

और उस गीत में, फसल के दिन, द्राक्ष-कुंज और द्राक्ष-कोल्हू की स्मृति हो।

: ७ :

श्रम

तब एक हलवाला बोला :

हमसे श्रम के संबंध में कुछ कहो।

इसके उत्तर में उसने कहा :

श्रम करो ताकि तुम जगत और जगदात्मा की गति के साथ रह सको।

क्योंकि आलसी होना, ऋतुओं से अनजान रहना, जीवन के उस जुलूस से बाहर हो जाना है जो सगौरव और सगर्व-समर्पणसहित अनंत की ओर प्रयाण कर रहा है।

जब तुम श्रम करते हो, तब तुम एक वंशी होते हो, जिसके अंतर से गुजरकर क्षणों की काना-फूंसी संगीत बन जाती है।

और जब शेष जगत एक स्वर में गा रहा है, तब तुममें से कौन होगा जो मूक और न बजनेवाला यंत्र बनना चाहेगा।

तुम्हें सदा यही बताया गया है कि श्रम अभिशाप है और मजदूरी दुर्भाग्य।

लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि जिस समय तुम श्रम करते हो उस समय तुम पृथ्वी के सुदूर के उस स्वप्न के एक अंश को पूर्ण करते हो, जो अपने जन्म के दिन तुम्हारे हवाले कर दिया

गया था ।

मेहनत करते रहकर तुम वास्तव में जीवन से प्रेम करते हो।

और श्रम द्वारा जीवन से प्रेम करना जीवन के रहस्यों से घनिष्ठता करना है ।

किंतु यदि तुम वेदना के आवेग में जन्म-धारण को एक संकट और जीवन को जीवित रखना ललाट पर लिखा अभिशाप मानते हो, तो मेरा भी कहना है कि केवल तुम्हारे ललाट का पसीना ही तुम्हारे ललाट के अक्षरों को धो सकेगा ।[1]

तुम्हें यह भी कहा गया है कि जीवन अंधकार है और, अपनी थकान में थके हुए लोगों का यह कथन, तुम भी प्रतिध्वनित करते हो ।

और मैं भी कहता हूं, जीवन वास्तव में अंधकार है, सिवा उन घड़ियों के जिनमें प्रेरणा का अस्तित्व है;

और संपूर्ण प्रेरणा अंधी है, सिवा उन घड़ियों के जिनमें श्रम का अस्तित्व है;

और संपूर्ण श्रम निस्सार है, सिवा उन घड़ियों के जिनमें प्रेम का अस्तित्व है;

और जब तुम प्रेमपूर्वक श्रम करते हो तब तुम अपने-आप से, एक-दूसरे से और ईश्वर से संयोग की गांठ से बांधते हो ।

और प्रेमपूर्वक श्रम करना है क्या ?

[1] श्रम के द्वारा ही तुम अपना भाग्य बदल सकते हो ।

यह है, तुम्हारे हृदय की रुई से काते हुए सूत से वस्त्र बुनना, मानो स्वयं तुम्हारे प्रियतम को ही इसे पहनना है;

यह है, अनुराग सहित एक घर का निर्माण करना, मानो वयं तुम्हारे प्रियतम को ही निवास करना है;

यह है, तुम्हारा सम्हाल-सम्हालकर बीज बोना और पुलकित होकर फसल काटना, मानो स्वयं तुम्हारे प्रियतम ही उसे खायंगे;

यह है, उन सभी वस्तुओं को, जिनकी तुम रचना करते हो, अपने प्राणों के श्वास से सजीव कर देना, और अनुभव करना कि तुम्हारे सभी स्वर्गवासी पूर्वज तुम्हारे आस-पास खड़े होकर तुम्हारा निरीक्षण कर रहे हैं।

मैंने अक्सर तुम्हें कहते सुना है, मानो नींद में बड़बड़ाते हो, "जो संगमरमर पर काम करता है और प्रस्तर में अपनी आत्मा की तस्वीर पाता है, वह खेत में हल चलानेवाले से श्रेष्ठ है।

"और जो[1] इंद्र-धनुष को पट पर मनुष्य की रूपरेखा देने के लिए आकाश से उतार लेता है वह हमारे पैरों की जूतियां बनानेवाले से श्रेष्ठ है।"

लेकिन मैं नींद में नहीं, धौले-दोपहर की जागृति में कहता हूं कि समीरण घास के छोटे-छोटे फुनगों की अपेक्षा विशाल देवदार वृक्ष से अधिक लाड़ से बात नहीं करता।

और केवल वही श्रेष्ठ है जो वायु की वाणी को अपने प्यार

---

[1] चित्रकार

से मधुरतर बनाये हुए गीत में परिवर्तित कर देता है ।

श्रम प्रेम को प्रत्यक्ष करता है ।

यदि तुम प्रेम-सहित श्रम नहीं कर सकते, बल्कि अरुचि से करते हो, तो अच्छा है कि तुम अपना काम छोड़ दो और मंदिर की सीढ़ियों के पास जा बैठो और उनके आगे हाथ पसारो जो आनंदपूर्वक श्रम करते हैं ।

क्योंकि यदि तुम लापरवाही से रोटी सेकते हो तो तुम बेसवाद रोटी बनाओगे, जिससे मनुष्य की भूख भी भाग जायगी।

यदि तुमको अंगूरों का रस निकालने में असंतोष है तो तुम्हारा असंतोष मदिरा में विष घोल देता है ।

और भले ही तुम ऐसा गाते हो, जैसा गंधर्व गाते हैं, लेकिन गाने को प्यार नहीं करते, तो तुम मनुष्य के कानों को ऐसे भर दोगे कि वे दिन के कोलाहल और रात्रि के स्वर को भी न सुन सकें ।

: ८ :

हर्ष और शोक

तब एक स्त्री ने कहा :

अब हमसे हर्ष और शोक के संबंध में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुम्हारा हर्ष है नग्न होकर प्रकट होनेवाला तुम्हारा शोक।

और वही कुआं, जिसमें से तुम्हारी हँसी उमड़ रही है, अनेक बार तुम्हारे आंसुओं से भरपूर रहा है।

इसके सिवा और कुछ हो ही कैसे सकता है ?

यह शोक जितनी अधिक गहराई तक तुम्हारे जीवन में कटाई करता है, उतना ही अधिक हर्ष तुम रख सकते हो।

वह प्याला, जिसमें तुम्हारी मदिरा भरी हुई है, क्या वही प्याला नहीं है जो कुम्हार के आवे में पकाया गया था ?

और यह बांसुरी, जो तुम्हारे हृदय का गम गलत करती है, क्या वही बांस का टुकड़ा नहीं है जिसमें चाकुओं से छेद किये गए थे ?

जब तुममें हर्ष की उमंगें उठें तब अपने हृदय की तह में देखो तो तुम्हें ज्ञात होगा कि जो तुम्हें हर्ष प्रदान कर रहा है, वह वही है, जिसने तुम्हें शोक दिया था।

ग्रौर जब तुम शोक में डूबे हुए हो, तब फिर ग्रपने ग्रंतरतम में झांको तो तुम देखोगे कि वास्तव में तुम उसके लिए रो रहे हो, जिसने तुम्हें प्रसन्नता प्रदान की थी।

तुममें से कुछ लोग कहते हैं, "हर्ष शोक से श्रेष्ठ है।" ग्रौर दूसरे कहते हैं, "नहीं, शोक श्रेष्ठ है।"

लेकिन मैं तुमसे कहता हूं, ये एक-दूसरे से न छूटनेवाले साथी हैं।

साथ-ही-साथ ये ग्राते हैं ग्रौर यदि एक ग्रकेला भोजन करते समय तुम्हारे साथ बैठा है, तो याद रखो कि दूसरा तुम्हारे बिस्तर पर सो रहा है।

वास्तव में तुम, तराजू की तरह, हर्ष ग्रौर शोक के भार से झुकते-उठते रहते हो।

ग्रौर केवल उस समय, जब कि तुम बिलकुल खाली होते हो, तुम स्थिर ग्रौर सम रहते हो।

जब खजांची ग्रपना सोना-चांदी तोलने के लिए तुम्हें उठाता है तब तुम्हारे हर्ष ग्रौर शोक नीचे-ऊपर होते ही हैं।

: ९ :

घर

तब एक राज आगे आया और बोला :

हमसे घरों के विषय में कुछ कहिये।

और उसने उत्तर दिया :

नगर के परकोटे के भीतर घर बनाने से पहले तुम अपनी कल्पनाओं से एक कुंज शून्य में बनाओ।

क्योंकि जैसे संध्या के धूमिल प्रकाश में तुम घर आते हो, वैसे ही तुम्हारे अंतर का चिर-प्रवासी एकाकी बटोही भी आता है।

तुम्हारा घर तुम्हारा कुछ बड़ा शरीर है।

वह सूर्य के प्रकाश में बढ़ता है और रात्रि की निस्तब्धता में सोता है, और वह भी सपनों से शून्य नहीं है; क्या तुम्हारा घर स्वप्न नहीं देखता ? और स्वप्न के देखते हुए शहर छोड़कर उपवनों में और गिरि-शिखरों पर नहीं जाता ?

काश, मैं तुम्हारे घरों को अपनी मुट्ठी में भर पाता और जिस तरह किसान खेत में बीज डालता है, उसी तरह मैं इन्हें जंगलों और मैदानों में बिखरा पाता।

काश पहाड़ी घाटियां तुम्हारी राहें होतीं और हरियाली पगडंडियां तुम्हारी गलियां; ताकि तुम एक-दूसरे के ढूंढते द्राक्ष-कुंजों में से गुजर कर सकते और भूमि की सुवास अपने कपड़ों में बसाकर लौट सकते।

लेकिन ये बातें अभी होनेवाली नहीं हैं।

भयवश तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हें एक-दूसरे के अत्यंत निकट इकट्ठा कर दिया। और वह भय अभी कुछ अरसे और बना रहेगा; और कुछ अरसे और नगर का परकोटा तुम्हारे घरों को खेतों से अलग करेगा।

और आरफालीज निवासियो! मुझे बताओ; तुम्हारे पास इन घरों में क्या है? और वह क्या है जिसकी तुम, दरवाजे बंद रखकर, रखवाली करते हो।

क्या वहां शांति है, तुम्हारी शक्ति को प्रकाशित करनेवाली प्रशांत प्रेरणा है?

क्या वहां स्मृतियां हैं, वे चमकती हुई मीनारें, जो मन के शिखरों पर फैली होती हैं?

क्या वहां सौंदर्य है जो हृदय को काठ और पत्थर की बनी हुई वस्तुओं से खींचकर पावन पर्वत पर ले जाता है?[1]

बताओ, हैं तुम्हारे घर में ये चीजें?

या वहां केवल भोग और भोग की लिप्सा है, जो आहिस्ता-आहिस्ता घर में मेहमान बनकर घुसती है, फिर मेजबान बन बैठती है और अंत में मालकिन?

अरे हां, वह तुम्हारी महत्तर आकांक्षाओं को अंकुश और

[1] कृत्रिमता से प्रकृति की ओर ले जाता है।

चाबुक द्वारा अपनी कठपुतलियां बनाती है, जिस तरह जंगली पशुओं को पालतू बनाया जाता है।

उसके हाथ रेशम के हैं, लेकिन उसका हृदय लोहे का है।

वह तुम्हें लोरियां गाकर सुला देती है, सिर्फ तुम्हारी खाट के पास खड़ी होकर तुम्हारे शरीर के गौरव का उपहास करने के लिए।

वह तुम्हारी स्वस्थ चेतनाओं का मजाक उड़ाती है और उन्हें टूट जानेवाले बर्तनों की तरह घास-फूंस में ढककर रख देती है।[1]

वास्तव में, सुख की लालसा आत्मा की उत्कट भावना का खून कर देती है और शव की श्मशान-यात्रा में खीसें निपोरती हुई चलती है।

परंतु, हे अनंत आकाश की संतानों, शांति में भी अशांत रहने-वाले, तुम इसके जाल में मत फंसो, न इसके पालतू बनो।

तुम्हारा घर जहाज का लंगर न बने[2], बल्कि मस्तूल बने;

वह किसी घाव की झिलमिलाती झिल्ली नहीं, बल्कि आंख की रक्षा करनेवाली पलक बने।

तुम दरवाजों में से गुजर सको, इसके लिए तुम अपने पंख समेटो मत, और कहीं छत से टकरा न जायं, इसके लिए सरों को झुकाओ मत, कहीं दीवारें दरककर गिर न पड़ें, इसके लिए सांस लेने से डरो मत।

---

[1] स्वस्थ चेतनाओं का प्रयोग नहीं होने देती। [2] प्रगति में बाधक न हो।

तुम उन मकबरों में मत रहो जो मुर्दों ने जीवितों के लिए बनाये हैं।

भले ही भव्य और सुंदर हो, लेकिन तुम्हारा घर न तो तुम्हारे राज़ों को छिपाये न तुम्हारी तृष्णाओं का आश्रय हो।

क्योंकि वह, जो तुममें अनंत है, आकाश के महल में रहता है, जिसका फाटक प्रभात का कोहरा है और जिसकी खिड़कियां रात्रि की रागनियां और खामोशियां हैं।

: १० :

वस्त्र

और एक जुलाहे ने कहा :

हमसे वस्त्रों के विषय में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया।

तुम्हारे वस्त्र तुम्हारे बहुत-से सुंदर अंश को छिपा लेते हैं, लेकिन असुंदर को नहीं।

यद्यपि तुम वस्त्रों में अपनी गुप्तता की आजादी खोजते हो, लेकिन तुमको प्राप्त होते हैं बंधन और बाधा।

काश धूप और वायु से तुम्हारा मिलन तुम्हारी त्वचा द्वारा अधिक होता और वस्त्रों द्वारा कम।

क्योंकि जीवन के प्राण सूर्य के प्रकाश में हैं और जीवन के हाथ हवा के झोकों में हैं।

तुममें से कुछ कहते हैं, "हम जो कपड़े पहनते हैं, उन्हें उत्तर की वायु ने बुना है।"

और मैं कहता हूं, "हां, वह उत्तर की वायु ने ही बुना है।"

लेकिन स्नायुओं की कमनीयता के सूत से लज्जा के करघे पर।

और जब उसका कार्य संपन्न हो गया, वह जंगल में खिल-

खिलाकर हँस पड़ी

भूलो मत कि मलिन-मनों की आंखों के सम्मुख लज्जा ढाल के समान है ।

और जब मलिन-मन ही न होंगे तब लज्जा केवल एक बेड़ी और विकृत करनेवाली वस्तु के अतिरिक्त क्या होगी ?

और भूलो मत कि धरती तुम्हारी नंगी पग-तलियों का स्पर्श पाकर प्रसन्न होती है और पवन तुम्हारे केशों से अठखेलियां करना चाहता है ।

: ११ :

क्रय-विक्रय

और एक व्यापारी बोला :

हमसे क्रय-विक्रय के संबंध में कुछ कहो।

उसने जवाब देते हुए कहा :

धरती अपनी उपज तुम्हारे हवाले करती है। और अगर तुम अपनी अंजलि भरना ही जान लो, तो तुम्हें कोई अभाव नहीं रहेगा।

पृथ्वी के उपहारों के लेने-देने में ही तुमको भरपूर प्राप्ति हो जायगी और तुम्हें संतोष होगा।

लेकिन अगर यह लेना-देना प्रेम और उदार न्यायपूर्ण न होगा तो वह कुछ लोगों को लोभ की ओर ले जायगा और कुछ लोगों को भूखा रहने की ओर।

ओ समुद्र, खेत और द्राक्ष-कुंजों में मेहनत करनेवालो, जब बाजार में तुम जुलाहों, कुम्हारों और पंसारियों से मिलो, तब--

पृथ्वी की महती आत्मा से तुम्हारे बीच आने की और तराजुओं को तथा वस्तुओं के मूल्य-निर्धारण के व्यवहार को शुद्ध

करने की प्रार्थना करो।

और अपने क्रय-विक्रय में उन खाली-हाथ निठल्लों को बरदाश्त मत करो, जो अपने शब्दों को तुम्हारे श्रम के बदले में बेचना चाहते हैं।

ऐसे लोगों से कहो :

"चलो हमारे साथ खेतों पर, या हमारे भाइयों के साथ समुद्र पर जाओ और जाल डालो;

"क्योंकि, पृथ्वी और समुद्र जितने हमारे प्रति उदार हैं, उतने ही तुम्हारे प्रति भी होंगे।"

और यदि वहां गानेवाले, नाचनेवाले और बंसी बजानेवाले आयें तो उनके उपहारों को भी खरीदो।

क्योंकि वे भी फल-फूल और धूप[१] के ग्राहक हैं और भले ही उनके लाये हुए उपहार स्वप्न के तारों से बनाये गए हैं, फिर भी वे तुम्हारी आत्मा के वस्त्र और भोजन हैं।

और हाट से बाहर आने के पहले, तुम्हें चाहिए कि यह तलाश करो कि कोई खाली हाथ तो वापस नहीं जा रहा।

क्योंकि पृथ्वी की महत् आत्मा को पवन की शैया पर चैन की नींद नहीं आयगी, जबतक कि तुममें से छोटे-से-छोटे के अभाव की संतुष्टि नहीं हो जायगी।

---

[१] जलाने की सुगंधि।

: १२ :

अपराध और दण्ड

इसके बाद नगर का एक न्यायाधीश सामने आया और बोला :

अब हमसे अपराध और दण्ड के विषय में कहो।

और उसने उत्तर देते हुए कहा :

जब तुम्हारी आत्मा[1] पवन पर सवार होकर भ्रमण करने गई होती है और जब तुम अकेले और असंरक्षित रह जाते हो, तभी तुम दूसरों के प्रति, फलत: अपने ही प्रति, अपराध करते हो।

और उस अपराध को करने के कारण तुम्हें प्रभु के दरवाजे को खटखटाते हुए कुछ समय तक उपेक्षित रहकर प्रतीक्षा करनी होगी।

तुम्हारा दैवी भाव[2] सागर के समान है।

वह सदैव अदूषित किया हुआ रहता है।

और आकाश की भांति वह केवल पंखवालों को ही ऊपर उठाता है।

और तुम्हारा दैवी-भाव सूर्य के समान भी है।

---

[1] यहांपर विवेक-बुद्धि के अर्थ में। [2] सात्त्विक अंश, कल्याणकारी प्रवृत्ति।

न तो वह छछूंदर[1] के रास्तों को जाता है, न वह सांपों के बिलों की तलाश करता है।

किंतु तुम्हारे अस्तित्व में तुम्हारा दैवी भाव अकेला नहीं रहता। तुममें बहुत-कुछ तो अभी भी मानव है, और बहुत-कुछ अभी तक मानव नहीं बल्कि अनघड़ बौना[2] है जो धुंध में अपनी जागृति को खोजता हुआ निद्रित अवस्था में घूमता है।

और तुम्हारे अंतर के मानव के विषय में मैं अब कुछ कहूंगा।

क्योंकि वही अपराध और अपराध के दण्ड को जानता है, न कि तुम्हारा दैवी भाव या धुंध में घूमनेवाला बौना।

अक्सर मैंने तुम्हें किसी अपराध करनेवाले की आलोचना करते सुना है, जैसे वह तुम्हींमें से एक नहीं है बल्कि तुम्हारे लिए अजनबी और तुम्हारे संसार में अनाधिकार प्रवेश करनेवाला है।

किंतु मेरा कथन है कि कोई पवित्र और पुण्यात्मा भी उस उच्चतम से ऊंचा नहीं उठ सकता, जो तुममें हरेक में मौजूद है।

उसी प्रकार कोई दुष्ट और दुर्बल उस निकृष्टतम से नीचे नहीं गिर सकता, जो तुममें मौजूद है।

और जैसे एक पत्ती भी संपूर्ण वृक्ष की खामोश जानकारी के बिना पीली नहीं पड़ती, वैसे ही अपराधी तुम सबकी छिपी हुई इच्छा के बिना अपराध नहीं कर सकता।

एक जुलूस की भांति तुम इकट्ठे अपने दैवी भाव की ओर जाते हो।

तुम्हीं राह हो और राहगीर भी।

और जब तुममें से कोई गिरता है, तो पीछे आनेवाले लोगों

---

[1] वक्रता और धोखेबाजी नहीं जानता। [2] नीच प्रवृत्ति।

के लिए गिरता है, ठोकर खिलानेवाले पत्थर से सावधान करने के लिए।

हां, वह गिरता है आगे जानेवालों के कारण, जो, यद्यपि अधिक फुरतीले और अचूक चाल चलनेवाले थे, फिर भी जिन्होंने ठोकर खिलानेवाले पत्थर को हटाया नहीं।

और सुनो, चाहे मेरे शब्द तुम्हारे हृदय को भारी लगें, जिसका वध किया गया है, अपने वध किये जाने के अभियोग से मुक्त नहीं है।

और जिसे लूटा गया है, वह अपनी लूट के लिए निर्दोष नहीं है।

और पुण्यात्मा दुष्ट द्वारा किये हुए कर्मों के संबंध में निर्दोष नहीं है।

और स्वच्छ हाथोंवाला, पाप से हाथ रंगनेवाले के कर्मों में निष्कलंक नहीं है।

यही नहीं, अपराधी भी प्रायः आहत व्यक्ति द्वारा पीड़ित होता है।

और भी, अक्सर दण्डित व्यक्ति निर्दोष और अकलंकित व्यक्तियों का भार उठानेवाला होता है।

तुम न्यायी को अन्यायी से, सज्जन को दुर्जन से जुदा नहीं कर सकते।

क्योंकि वे सूर्य के सम्मुख इस प्रकार पास-पास खड़े होते हैं जिस प्रकार काले और सफेद धागे साथ-साथ बुने जाते हैं।

और जब काला धागा टूटता है तो जुलाहे को सारा कपड़ा देखना पड़ता है। और करघे की भी जांच करनी पड़ती है।

अगर तुममें से कोई किसी असती पत्नी का न्याय करने लगे,

तो उसे चाहिए कि वह उसके पति के हृदय को भी कांटे पर तौले और माप-दण्ड से उसकी आत्मा को नापे।

किसी अपराधी को कोड़े लगानेवाले को चाहिए कि वह, जिसके प्रति अपराध किया गया है, उसके अंतरंग में भी झांककर देखे।

और यदि तुममें से कोई पुण्य के नाम पर दण्ड देना चाहे और पाप के वृक्ष पर कुल्हाड़ी चलाना चाहे तो उसे चाहिए कि उसकी जड़ों को भी देखे।

और निश्चय ही, वह भले और बुरे, फल-युक्त और फल-विहीन की जड़ों को पृथ्वी के प्रशांत हृदय में परस्पर गुंथा हुआ पायगा।

और न्याय-प्रिय न्यायाधीशो !

तुम उसे क्या सजा दोगे जो शरीर से ईमानदार है लेकिन मन से चोर है ?

और तुम उस व्यक्ति को क्या दंड दोगे जो देह की हत्या करता है लेकिन जिसकी खुद की आत्मा का हनन किया गया है ?

और उसपर तुम मुकदमा कैसे चलाओगे जो आचरण में धोकेबाज और जालिम है लेकिन जो खुद संत्रस्त और अत्याचार-पीड़ित है ?

और तुम उन्हें कैसे सजा दोगे जिनको पश्चात्ताप पहले ही उनके दुष्कृत्यों से अधिक है ?

और क्या यह पश्चात्ताप ही उस कानून का दिया हुआ

न्याय नहीं है, जिसका पालन करने का प्रयास तुम भी करते रहते हो ?

फिर भी तुम निरपराध के हृदय पर पश्चात्ताप नहीं लाद सकते और न किसी अपराधी के हृदय पर से उठा सकते हो।

बिना बुलाये रात्रि के समय वह आता है ताकि लोग जागें और आत्म-निरीक्षण करें।

और तुम, जो न्याय को जान लेना चाहते हो, उसे कैसे जान सकते हो, यदि सारे कार्यों को पूर्ण प्रकाश में नहीं देखते।

तभी तुम जान सकते हो कि उन्नत और पतित दोनों तुम्हारे बौने अस्तित्व की रात्रि और दैवी अस्तित्व के दिवस के संधिस्थल के धुंधले प्रकाश में खड़े हुए एक ही व्यक्ति हैं।

और मंदिर की कोण-शिला उसकी नींव में सबसे नीचे गड़े हुए पत्थर से ऊंची नहीं है।

: १३ :

कानून

तब एक वकील ने कहा :

मालिक, कानून के विषय में आपकी क्या राय है ?

और उसने उत्तर दिया :

तुम्हें कायदे घड़ने में मजा आता है,

और उससे भी अधिक तुम्हें भंग करने में,

जैसे समुद्र के किनारे पर खेलनेवाले बालक दत्त-चित्त होकर बालू के महल बनाते हैं और फिर खिलखिलाते हुए उन्हें तोड़ डालते हैं।

लेकिन जब तुम रेत के भवन बनाते हो, समुद्र किनारे पर और भी रेत ला-लाकर डालता रहता है, और जब उन्हें मिटा देते हो, तब वह भी तुम्हारे साथ अट्टहास कर उठता है।

निश्चय ही, समुद्र सदा निर्दोष की हँसी में साथ देता है।

किंतु ऐसे लोगों के बारे में क्या कहा जाय जिनके लिए जीवन एक समुद्र नहीं है और मनुष्य-निर्मित कानून केवल बालू के भवन नहीं हैं;

बल्कि जिनके लिए जीवन एक चट्टान है जिसको कानून

एक छेनी से काटकर अपनी जैसी मूर्त्ति में घड़ लेते हैं।

उस लंगड़े के बारे में क्या कहा जाय जो नाचनेवालों से घृणा करता है?

उस बैल के बारे में क्या कहा जाय जो जुए को पसंद करता है और जंगल के बारहसिंगों और हरिणों को गुमराह और अवारा समझता है?

उस बूढ़े सांप के बारे में क्या कहा जाय जो अपनी केंचुली उतारने में समर्थ नहीं है और दूसरों को नंगा और निर्लज्ज बताता है?

अथवा उसके बारे में क्या कहा जाय जो विवाह-भोज में सबसे पहले आकर खाने पर डट जाता है और खाते-खाते थक जाने पर अपना रास्ता नापता है और कहता जाता है कि सब दावतें कानून-विरुद्ध हैं और दावतें खानेवाले कानून तोड़नेवाले हैं?

इन सबके विषय में, मैं इसके सिवा और क्या कह सकता हूं कि वे भी सूर्य के प्रकाश में ही खड़े हैं, लेकिन सूर्य की ओर पीठ करके।

वे केवल अपनी छायाएं देखते हैं और उनकी छायाएं उनके कानून हैं।

और सूर्य उनके लिए छायाएं प्रतिबिंबित करनेवाले के सिवा है ही क्या?

लेकिन कानूनों को स्वीकार करने का अर्थ नीचे झुककर पृथ्वी पर अपनी छायाओं की रूप-रेखा अंकित करने के सिवा और है ही क्या?

लेकिन सूर्याभिमुख होकर चलनेवाले तुम लोगों को भूमि पर खींची हुई कौन-सी प्रतिमाएं पकड़ रख सकती हैं ?

और पवन के साथ यात्रा करनेवाले तुम लोगों को पथ-प्रदर्शन कौन-सा पवन-चक्र[1] कर सकता है ?

यदि तुम अपना जुआ तोड़ फैंको, लेकिन मनुष्य-निर्मित किसी कारागार के द्वार पर नहीं हो तो तुम्हें मनुष्य का कौन-सा कानून बांध सकता है ?

यदि तुम नाचो, लेकिन मनुष्य-निर्मित लौह-शृंखलाओं से टकराओ नहीं, तो तुम्हें किन कानूनों का डर है ?

और यदि तुम अपने कपड़े फाड़ फैंको, लेकिन किसीके मार्ग में डालो नहीं, तो ऐसा कौन हो सकता है जो तुम्हें न्याय की कुर्सी के सामने खड़ा करे ?

हे आरफालीज-निवासियो, तुम ढोल की आवाज दबा सकते हो, और वीणा के तारों को ढीला कर दे सकते हो, लेकिन चकवे को न गाने की आज्ञा कौन दे सकता है ?

---

[1] हवा का रुख बतानेवाला चक्र।

: १४ :

स्वतंत्रता

और एक व्याख्यानदाता बोला :

हमसे स्वतंत्रता के संबंध में कुछ कहो।

उसने उत्तर दिया :

मैंने तुम्हें नगर-द्वार और अलाव[1] पर अपनी स्वतंत्रता को साष्टांग दण्डवत् करते और उसकी पूजा करते[2] देखा है,

जिस प्रकार गुलाम अपने अत्याचारी मालिक की मिन्नत और स्तुति करता है, यद्यपि वह उन्हें मार ही डालता है।

हां, हां, मैंने मंदिर के कुंज और किले की आड़ में तुममें से अधिक-से-अधिक आजाद आदमी को भी अपनी स्वतंत्रता को जुआ और हथकड़ी बनाकर धारण किये हुए देखा है।

और मेरा हृदय भीतर-ही-भीतर रो पड़ा है।

क्योंकि तुम स्वतंत्र तभी होगे जब स्वतंत्र होने की इच्छा भी तुम्हें बंधन जान पड़ेगी और जब स्वाधीनता को तुम ध्येय और सिद्धि कहना छोड़ दोगे।

---

[1] देहातों में लोग जाड़ों में आग जलाकर उसके चारों ओर बैठकर बातें किया करते हैं।

[2] चर्चाओं में स्वतंत्रता के प्रति श्रद्धा प्रकट करते।

वास्तव में तुम स्वतंत्र तभी होगे जब तुम्हारे दिन चिंता-रहित नहीं होंगे और न रातें वासना और शोक से खाली होंगी,

बल्कि जब ये चीजें तुम्हें पीसती होंगी और फिर भी तुम इनसे ऊपर उठोगे—नग्न और मुक्त।

और तुम अपने दिन-रातों के ऊपर कैसे उठ सकते हो, जब-तक कि तुम उन जंजीरों को नहीं तोड़ते जिन्हें कि तुमने अपने ज्ञान के सूर्योदय में अपनी दोपहरियों के चारों तरफ कस दिया है ?

यथार्थ में, जिसे तुम स्वाधीनता कहते हो वह इनमें सबसे अधिक मजबूत जंजीर है,

यद्यपि इसकी कड़ियां धूप में चमकती हैं और तुम्हारी आंखों को चौंधिया देती हैं।

और वे हैं क्या, तुम्हारे स्वयं के टुकड़े ही तो, जिन्हें त्याग-कर तुम स्वतंत्र होना चाहते हो।

तुम किसी न्यायपूर्ण कानून को रद्द करना चाहते हो, परंतु वह कानून कभी तुमने अपने हाथों से अपने ही ललाट पर लिखा था।

तुम उसे मिटा नहीं सकते भले ही कानून की किताबें जला दो अथवा अपने न्यायाधीशों के कपालों को धोने के लिए तुम समुद्र उंडेल दो।

तुम किसी जालिम राजा को सिंहासन से उतारना चाहते हो तो पहले यह निश्चय कर लो कि तुम्हारे दिल में जो उसका सिंहा-सन स्थित है वह भी नष्ट हो चुका है।

क्योंकि, यदि स्वतंत्र और स्वाभिमानी की स्वतंत्रता में

अत्याचार और स्वाभिमान में बेशर्मी का अंश नहीं है तो उस-पर कोई अत्याचारी शासन कर ही कैसे सकता है ?

तुम किसी चिंता को उतार फेंकना चाहते हो, परंतु उस चिंता को तुमने स्वयं चुना है, किसीने तुमपर लादा नहीं।

तुम किसी भय को भगाना चाहते हो परंतु उसका निवास-स्थान स्वयं तुम्हारे हृदय में है, न कि उसके हाथ में, जो तुम्हें भयभीत करता है।

वास्तव में, वे सभी वस्तुएं एक-दूसरे से सटकर तुम्हारे ही अंदर मौजूद रहती हैं, जिनको तुम चाहते हो और जिनसे तुम डरते हो, जिनसे तुम घृणा करते हो और जिनकी तुम अभिलाषा करते हो, जिनके पीछे तुम दौड़ रहे हो और जिनसे तुम छुटकारा चाहते हो।

ये सभी वस्तुएं तुम्हारे अंतराल में प्रकाश और छाया की तरह, एक-दूसरे का अनुसरण करनेवाले जोड़ों के रूप में, घूमती रहती हैं।

और जब छाया मंद पड़ती है और मिट जाती है तो वह प्रकाश, जो विदा लेने में विलंब कर रहा है, दूसरे प्रकाश के लिए छाया बन जाता है।

इस प्रकार जब तुम्हारी स्वतंत्रता, जब अपनी बेड़ियां तोड़ देती है, तब उच्चतर स्वतंत्रता के लिए बेड़ियां बन जाती है।

: १५ :

विवेक और वासना

और पुजारिन ने फिर कहा :

हमसे विवेक और वासना के संबंध में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

अनेक बार तुम्हारा अंतःकरण संग्राम-भूमि बनता है, जहां तुम्हारा विवेक और तुम्हारी न्याय-बुद्धि तुम्हारी वासना एवं तृष्णा के विरुद्ध युद्ध करती है।

काश मैं तुम्हारे अंतःकरण में शांति-निर्माता बन सकता और तुम्हारे तत्त्वों की पारस्परिक विषमता और प्रतिस्पर्द्धा को एकता और लय में बदल सकता!

किंतु, यह मैं कैसे कर सकता हूं, यदि तुम स्वयं भी शांति-निर्माता—नहीं-नहीं—अपने सभी तत्त्वों के प्रेमी नहीं बनते?

तुम्हारा विवेक और तुम्हारी वासना, तुम्हारी समुद्र-प्रवासी आत्मा के पाल औ' पतवार हैं।

यदि तुम्हारी पाल या पतवार टूट जाय तो तुम लहरों द्वारा उछाले जाकर कहीं को बहोगे या फिर बीच समुद्र में जहां-के-तहां रुके रहोगे।

क्योंकि, विवेक एकाकी राज करते हुए मर्यादित करनेवाली

शक्ति है और बे-लगाम वासना वह ज्वाला है जो स्वयं अपने-को जलाकर समाप्त करने तक जलती है।

अतएव तुम्हारी आत्मा तुम्हारे विवेक को वासना की ऊंचाई तक उठाये ताकि वह गा सके।

और तुम्हारो वासना को विवेक से संचालित होने दो ताकि तुम्हारी वासना नित्य ही अपने विनाश में से नया जन्म पा सके और अनल पक्षी[1] के समान भस्म होकर पुनः जीवित हो सके।

मैं चाहता हूं कि तुम अपने विवेक और अपनी तृष्णा का सत्कार अपने घर आये हुए दो प्रिय अतिथियों के समान करो।

निश्चय ही, एक अतिथि का दूसरे अतिथि से बढ़कर सत्कार तुम नहीं करोगे। क्योंकि, जो एक का अधिक ध्यान रखता है, वह दोनों के प्रेम और विश्वास से हाथ धो बैठता है।

जब तुम पहाड़ियों में नीम की शीतल छाया में, खेतों और मैदानों की शांति और गंभीरता में भाग लेते हुए बैठो, तब तुम्हारा हृदय उस शांति में बोले, "ईश्वर विवेक में निवास करता है।"

और जब तूफान उठे, प्रबल वायु जंगलों को झकझोरे, और बिजली और बादलों की कड़क आकाश की भव्य भीषणता घोषित करे, तब तुम्हारा हृदय भय के साथ कहे, "ईश्वर

---

[1] ग्रीस में किंवदंती है कि फिनिक्स पक्षी मृत्यु समीप आने पर अग्नि में गिरकर जल जाता है और कुछ क्षण बाद उसकी राख में से वैसा-का-वैसा एक पक्षी निकलकर आकाश में उड़ने लगता है।

वासना में विचरण करता है।"

श्रौर चूंकि तुम भी प्रभु के लोक में एक सांस हो, ईश्वर के जंगल में एक पत्ते हो, इसलिए तुम भी विवेक में निवास श्रौर वासना में विचरण करो।

: १६ :

दुःख

और एक स्त्री बोली :

हमसे दुःख के संबंध में कुछ कहो।

और उसने कहा :

तुम्हारा दुःख उस छिलके का तोड़ा जाना है, जिसने तुम्हारे ज्ञान को अपने भीतर छिपा रखा है।

जिस तरह फल के कठोर छिलके का टूटना अनिवार्य है, ताकि उसका हृदय सूर्य के प्रकाश में आ सके, उसी तरह तुमको भी दुःख का परिचय प्राप्त होना चाहिए।

यदि तुम अपने जीवन के रोजमर्रा के चमत्कारों के प्रति अपने हृदय को आश्चर्य में रख सको तो तुम्हें तुम्हारा दुःख तुम्हारे सुख की अपेक्षा कम आश्चर्यपूर्ण प्रतीत नहीं होगा।

और तुम अपने हृदय की ऋतुओं को उसी तरह स्वीकार करोगे जिस तरह तुम उन ऋतुओं को स्वीकार करते हो, जो तुम्हारे खेतों से गुजरती हैं। और तुम शांतिपूर्वक अपने शोक के पतझड़ों को देख सकोगे।

अपने अधिकांश दुःख को तुमने स्वयं चुना है।

---

[1] परिवर्तन।

दुःख एक कड़वी औषधि है, जिससे तुम्हारा अंतर्वासी चिकित्सक तुम्हारे रोगी अस्तित्व को स्वस्थ करता है।

इसलिए अपने चिकित्सक पर विश्वास करो और उसकी दी हुई औषधि को चुपचाप शांति से पीलो;

क्योंकि उसके हाथ यद्यपि कठोर और भारी हैं, अदृश्य के कोमल हाथ से संचालित होते हैं।

और उसका दिया हुआ प्याला यद्यपि तुम्हारे ओठों को जलाता है, फिर भी वह उस मिट्टी से बनाया गया है जिसे 'कुम्हार' ने अपने पवित्र आंसुओं से सींचा है।

: १७ .

आत्म-ज्ञान

और एक आदमी ने कहा :

आत्म-ज्ञान के संबंध में हमसे कुछ कहो।

और उसने कहा :

तुम्हारे हृदय निःशब्दता में दिवस और रात्रि के रहस्यों को जानते हैं।

परंतु तुम्हारे कान तुम्हारे हृदय के ज्ञान के शब्द के प्यासे हैं।

जो तुम विचारों में सदा जानते रहे हो उसे तुम शब्दों में जानना चाहते हो।

ऐसा करना ठीक भी है।

तुम्हारी आत्मा के गुप्त जल-स्रोत को बाहर फूटकर समुद्र की ओर कल-कल करते हुए बहना ही चाहिए।

और तब तुम्हारी अतल गहराइयों का कोष तुम्हारे नेत्रों के आगे प्रकट हो जायगा।

परंतु तुम्हारे अज्ञात खजाने को तोलने के लिए तराजू न हो।

और किसी वांस या थाह लेनेवाली डोरी से अपने ज्ञान की गहराई नापने का प्रयत्न न करना;

क्योंकि आत्मा अगाध और असीम समुद्र है।

'मैंने सत्य को पा लिया," ऐसा मत कहो, बल्कि कहो, "मैंने एक सत्य पाया है।"

"मैंने आत्मा का मार्ग पा लिया," ऐसा मत कहो, बल्कि कहो, "मैंने अपने मार्ग पर चलते हुए आत्मा के दर्शन किये हैं।"

क्योंकि आत्मा सभी रास्तों पर चलती है। आत्मा एक ही लीक पर नहीं चलती, न वह नरकुल की तरह उगती है;

आत्मा असंख्य पंखुड़ियोंवाले कमल के सदृश अपने-आपको विकसित करती है।

: १८ :

अध्यापन

तब एक अध्यापक ने कहा :

हमसे अध्यापन के विषय में कुछ कहो।

और उसने कहा :

तुम्हारे ज्ञान के उषा-काल में, जो कुछ पहले से ही अर्द्ध-निद्रित अवस्था में विद्यमान है, उसके अतिरिक्त कोई भी तुम्हारे आगे कुछ प्रकट नहीं कर सकता।

जो अध्यापक अपने अनुगामियों में मंदिर की छाया तले विचरण करता है, वह उन्हें अपने ज्ञान का अंश नहीं, बल्कि अपना विश्वास और वात्सल्य प्रदान करता है।

यदि वह, वास्तव में, बुद्धिमान है तो वह तुम्हें अपने ज्ञान-मंदिर में प्रवेश करने के लिए नहीं कहता, बल्कि वह तुम्हें तुम्हारी बुद्धि की दहलीज तक ले जायगा।

खगोल-शास्त्रज्ञ अपने आकाश-संबंधी ज्ञान के विषय में तुमसे चर्चा कर सकता है, किंतु वह अपना ज्ञान तुम्हें प्रदान नहीं कर सकता।

गायक गाकर तुम्हें सर्वत्र-व्यापी लय में से कुछ सुना सकता है, परंतु वे कान नहीं दे सकता जो उस लय को पकड़ लेते हैं, न

उसको प्रतिध्वनित करनेवाली आवाज ही।

और निपुण गणितज्ञ तुमसे तौल और माप के लोक की बातें कह सकता है, लेकिन वह तुम्हें वहां ले नहीं जा सकता।

क्योंकि, एक मनुष्य की दर्शन-शक्ति दूसरे मनुष्य को अपने पंख नहीं दे सकती।

और जैसे ईश्वर की दृष्टि में तुम सब अलग-अलग खड़े हो, वैसे ही तुममें से प्रत्येक को भी अपने ईश्वरीय ज्ञान और लौकिक अनुभूति में अकेला रहना चाहिए।

: १६ :

मित्रता

और एक युवक ने कहा :

हमसे मित्रता के विषय में कुछ कहो ।

और उसने उत्तर दिया :

तुम्हारा मित्र तुम्हारे अभावों की पूर्ति है ।

वह तुम्हारा खेत है, जिसमें तुम प्रेम का बीज बोते हो और कृतज्ञता का फल प्राप्त करते हो ।

वह तुम्हारा भोजन-गृह है और वही तुम्हारा अलाव ।

क्योंकि, तुम उसके पास अपनी भूख लेकर जाते हो और शांति पाने की इच्छा से उसे तलाश करते हो ।

जब तुम्हारा मित्र तुम्हारे सामने अपना दिल खोलकर रखे तो तुम अपने मन के 'न' को प्रकट करने में मत डरो और न 'हां' कहने में झिझको ।

और जब वह चुप होता है, तब भी तुम्हारा हृदय उसके दिल की आवाज सुनना बंद नहीं कर देता ।

क्योंकि मित्रता में, शब्दों की सहायता के बिना ही सारे विचार, सारी कामनाएं, और सारी आशाएं अव्यक्त आनंद के साथ पैदा होती और उपभोग में आती हैं ।

जब तुम अपने मित्र से विदा हो तो शोक मत करो।

क्योंकि, तुम उसमें जिस वस्तु को सबसे अधिक प्यार करते हो, वही उसकी अनुपस्थिति में अधिक स्पष्ट हो सकती है, जैसे एक पर्वतारोही को नीचे मैदान से पर्वत अधिक स्पष्ट और सुंदर दिखाई देता है।

आत्मीयता को गहरा बनाते रहने के सिवा तुम्हारी मित्रता में कोई और प्रयोजन नहीं होना चाहिए।

क्योंकि, जो प्रेम अपने ही रहस्य का घूंघट खोलने के अतिरिक्त कुछ और खोजता है, वह प्रेम नहीं, एक जाल है जिसमें निकम्म वस्तु के सिवा और कुछ नहीं फंसता।

तुम्हारी प्रिय-से-प्रिय वस्तु अपने मित्र के लिए हो।

जिसने तुम्हारे जीवन-समुद्र का भाटा[१] देखा है उसे उसका ज्वार[२] भी देखने दो।

क्योंकि मित्र क्या ऐसी वस्तु है जिसे तुम समय की हत्या करने के लिए खोजते हो?

सदैव समय को सजीव करने के लिए उसे खोजो;

क्योंकि उसका काम तुम्हारे अभाव की पूर्ति करना है, न कि तुम्हारे खालीपन को भरना।

और मैत्री के माधुर्य में हास्य का स्फुरण हो और उल्लास का विनिमय;

क्योंकि नन्हीं-नन्हीं चीजों के ओस-कणों में हृदय अपना प्रभात देखता है और ताजा हो उठता है

---

[१] मुसीबत में साथ दिया है।

[२] उन्नति के दिनों में उसे साथ रखो

:२०:

वार्त्तालाप

और तब एक विद्वान् ने कहा :

हमसे वार्त्तालाप के विषय में कुछ कहो ।

और उसने उत्तर दिया :

जब तुममें और तुम्हारे विचारों में शांति नहीं रह पाती तब तुम बातचीत करते हो ।

जब तुम अपने हृदय के एकांत में और अधिक निवास नहीं कर सकते तब तुम अपने ओठों पर वास करते हो, और वाणी परिवर्तन तथा विनोद का साधन है ।

और तुम्हारी अधिकांश चर्चाओं में विचार का कचूमर निकाल दिया जाता है ।

क्योंकि, विचार आकाश का पक्षी है जो शब्दों के पिंजरे में अपने पंख भले ही फड़फड़ा ले, लेकिन उड़ नहीं सकता ।

तुममें से अनेक अकेलेपन से डरकर किसी बातूनी की खोज करते हैं ।

क्योंकि, एकांत की नीरवता उनकी आंखों के सामने उनका नंगा रूप प्रकट कर देती है और वे उससे भागना चाहते हैं।[1]

---

[1] अपना नग्न रूप देखना पंसद नहीं करते ।

और कुछ लोग बात करते हुए अनजाने से, पूर्व-विचार के किसी सत्य को प्रकट कर देते हैं जिसे वे स्वयं नहीं समझते।

और कुछ लोग ऐसे हैं, जिनके हृदय में सत्य है, लेकिन वे उसे शब्दों में व्यक्त नहीं करते।

ऐसे ही लोगों के हृदय में आत्मा लयपूर्ण संगीत में निवास करती है।

जब तुम अपने मित्र से सड़क पर या हाट-बाजार में मिलो तब तुम्हारी भावना ओठों को गति दे और तुम्हारी जिह्वा का संचालन करे।

तुम्हारी वाणी की वाणी उसके कानों के कान में प्रवेश करे।

क्योंकि उसकी आत्मा तुम्हारे हृदय के सत्य को सम्हाल-कर रखेगी, जिस तरह जब मदिरा के रंग की याद नहीं रहती और प्याला सामने नहीं रहता तब भी उसका स्वाद याद रहता है।

: २१ :

समय

और एक खगोल-शास्त्रज्ञ ने कहा :

मालिक, समय के संबंध में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुम माप-हीन और अमाप्य समय की माप करना चाहते हो।

समय और ऋतु के अनुसार तुम अपने व्यवहार को व्यवस्थित और आत्मा की गति को भी संचालित करना चाहते हो।

समय को तुम एक स्रोत बनाना चाहते हो, जिसके किनारे बैठकर तुम उसके प्रवाह का अवलोकन करना चाहते हो।

लेकिन तुम्हारे अंदर का कालातीत[1] तुम्हारे जीवन की कालातीतता से परिचित है।

और जानता है कि बीता हुआ कल आज की स्मृति है और आनेवाला कल आज का स्वप्न।

और वह जो तुम्हारे हृदय में जाता है और चिंतन करता है, अब भी उसी आदि क्षण की सीमा में निवास करता है, जिस

[1] समम की सीमा के पार रहनेवाला ईश्वर।

क्षण ने आकाश में नक्षत्रों को छितराया था।

तुममें से कौन अनुभव नहीं करता कि उसकी प्रेम करने की शक्ति असीम है ?

और फिर भी कौन यह अनुभव नहीं करता कि वही प्रेम, जो सीमाहीन है, उसीके अस्तित्व के केंद्र में केंद्रित रहकर न तो एक प्रेम-भावना से दूसरी प्रेम-भावना की ओर, और न एक प्रेम-लीला से दूसरी प्रेम-लीला की ओर अग्रसर होता है ?

और क्या प्रेम की भांति ही समय भी अविभाज्य और अचल नहीं है ?

लेकिन यदि तुम अपने विचार में समय को ऋतुओं में मापना चाहते हो तो प्रत्येक ऋतु को अन्य सारी ऋतुओं पर घेरा डालने दो।

और आज को स्मृति द्वारा अतीत का और चाह द्वारा भविष्य का आलिंगन करने दो।

: २२ :

भलाई-बुराई

और नगर के एक बुजुर्ग ने कहा :

हमसे भलाई और बुराई के विषय में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुममें जो भलाई है, उसके विषय में मैं कह सकता हूं, बुराई के विषय में नहीं।

और बुराई है क्या—अपनी भूख और प्यास से सताई हुई भलाई ही तो।

जब भलाई को भूख लगती है तब वह अंधेरी गुफाओं में भी अपनी खुराक खोजती है, और जब उसे प्यास लगती है तो सड़ा पानी भी पी जाती है।

जब तुम स्वरूप के साथ एक-रूप होते हो तब तुम भले हो;

लेकिन जब तुम स्वरूप के साथ एक-रूप नहीं होते तब भी बुरे नहीं हो।

क्योंकि विभाजित घर चोरों की मांद नहीं है—विभाजित घर ही है।

और एक बे-पतवार नौका खतरनाक द्वीपों में लक्ष्यहीन

मारी-मारी भले ही घूमे, लेकिन फिर भी डूबकर तली में न पहुंचें।

जब तुम अपने-आपका दान करने के लिए कठिन श्रम करते हो, तब तुम भले हो।

लेकिन तब भी तुम बुरे नहीं हो जब तुम अपने लाभ के लिए कठिन श्रम करते हो।

क्योंकि, जब तुम लाभ के लिए कठिन श्रम करते हो तब तुम केवल एक जड़ हो, जो पृथ्वी से लिपटकर उसका स्तन-पान करती है।

निश्चय ही, फल जड़ से कह सकते, "तुम भी मेरे समान बनो--परिपक्व, सरस, और दूसरों को अपना सब-कुछ दे देने को प्रस्तुत।"

क्योंकि फल की आवश्यकता है देना, और जड़ की आवश्यकता है लेना।

तुम भले हो जब तुम अपने वार्त्तालाप में पूर्णतः सजग हो।

लेकिन तब भी तुम बुरे नहीं हो जब तुम सोते हो और तुम्हारी जबान अनर्गल प्रलाप करती है।

और अनर्गल प्रलाप भी दुर्बल जिह्वा को सबल बना सकता है।

तुम भले हो जब तुम अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ता और साहसपूर्वक पैर बढ़ाते हो।

लेकिन तब भी तुम बुरे नहीं हो जब तुम उस तरफ लंगड़ाते-लंगड़ाते जाते हो।

लंगड़ाते हुए जानेवाले लोग भी पीछे की तरफ नहीं जाते।

लेकिन जो मजबूत और फुर्तीले हैं, उन्हें चाहिए कि इसे अपनी कृपा समझकर, किसी लंगड़े के सामने लंगड़ाने न लगें।

तुम अनगिनत तरीकों से भले हो, लेकिन यदि तुम भले नहीं हो, तो बुरे भी नहीं हो।

सिर्फ आवारा और आलसी हो।

अफसोस, हरिण कछुए को अपनी फुर्ती नहीं सिखा सकता।

विराट स्वरूप की प्राप्ति की आकांक्षा में तुम्हारी भलाई निहित है और ऐसी आकांक्षा प्राणि-मात्र में है।

लेकिन तुममें से, कुछमें, यह आकांक्षा भरपूर है, जो पर्वत प्रदेश के गुप्त संदेश और वन-उपवन के मधुर संगीत को अपने में भरे हुए, जोर-शोर से समुद्र की ओर दौड़ा जा रहा है।

और दूसरों में यह आकांक्षा एक उथली सरिता है जो समुद्र-तट पर पहुंचने के पहले बल खाती, घूमती-फिरती, मंथर-गति से विलगती जाती है।

लेकिन जिस व्यक्ति की आकांक्षाएं अधिक हैं, वह अल्प-आकांक्षावाले से न कहे "तुम सुस्त और रुक-रुक जानेवाले क्यों हो ?"

क्योंकि कोई सचमुच भला मानस नंगे से नहीं पूछता—"तुम्हारे कपड़े कहां हैं ?" न किसी बेघर-बार से पूछता है—"तुम्हारे घर-बार को क्या हुआ ?"

: २३ :

प्रार्थना

तब एक पुजारिन ने कहा :

हमसे प्रार्थना के संबंध में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

तुम अपने दुख और अभाव के दिनों में प्रार्थना करते हो; यदि तुम अपने उल्लास की पूर्णता और समृद्धि के दिनों में भी प्रार्थना करो तो कितना अच्छा हो !

क्योंकि, प्रार्थना है क्या––केवल स्वरूप का चिदाकाश में विस्तार ही तो !

और यदि अपने अंधकार को आकाश में उंडेलना तुम्हारे आनंद का कारण है, तो तुम्हारे हृदय के उषाकाल को उंडेलना भी तुम्हारे उल्लास का कारण है।

और जिस समय तुम्हारी आत्मा तुम्हें प्रार्थना करने के लिए पुकारे उस समय तुम यदि रोए बिना न रह सको, तो तुम्हारे रोते रहते भी वह बार-बार तुम्हें प्रेरित करती रहे, जब-तक कि तुम हँसते-हँसते न आओ।

जब तुम प्रार्थना करते हो, तब तुम वायुमंडल में उन

लोगों से मिलने के लिए ऊपर उठते हो, जो उन्हीं घड़ियों में प्रार्थना कर रहे होते हैं और जिनसे सिवा प्रार्थना के समय तुम कभी मिल ही नहीं सको।

अतएव तुम्हारा उस अदृश्य मंदिर में प्रवेश परमानंद और मधुर मिलाप के सिवा और किसी हेतु नहीं हो।

क्योंकि, याचना के उद्देश्य के अतिरिक्त और किसी उद्देश्य के बिना तुम मंदिर में प्रवेश करो तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।

और यदि तुम वहां दीन बनने की भावना से भी प्रवेश करते हो, तब भी तुम्हारा उद्धार नहीं होगा।

या यदि तुम किसी दूसरे के हितार्थ भी कुछ मांगने के लिए प्रवेश करते हो, तब भी तुम्हारी सुनवाई नहीं होगी।

तुम्हारे लिए तो इतना ही काफी है कि तुम अदृश्य मंदिर में प्रवेश करो।[1]

शब्दों में प्रार्थना करना मैं तुम्हें नहीं सिखा सकता।

ईश्वर तुम्हारे शब्दों को तबतक नहीं सुनता, जबतक कि वह स्वयं ही उन शब्दों को तुम्हारे ओठों द्वारा नहीं बोलता।

और मैं तुम्हें समुद्रों, जंगलों और पहाड़ों की प्रार्थना भी नहीं सिखा सकता।

लेकिन तुम जो पहाड़ों, जंगलों और समुद्रों से उत्पन्न हुए हो, अपने हृदय में उनकी प्रार्थना पा सकते हो।

और यदि तुम रात्रि की प्रशांतता में ही सुनो, तो तुम उन्हें नीरवता में यह कहते हुए सुनोगे :

"हे हमारे ईश्वर, हमारा पंखोंवाला स्वरूप, हममें यह तेरी

---

[1] उद्देश्यहीन।

ही इच्छा है, जो इच्छा करती है।

"हममें यह तेरी ही कामना है, जो कामना करती है।

"हममें यह तेरी ही प्रेरणा है, जो हमारी स्त्रियों को, जो तेरी हैं, दिवसों में परिवर्तित कर देती है, जो कि तेरे ही हैं।

"हम तुझसे किसी भी चीज की याचना नहीं कर सकते, क्योंकि तू हमारे अभावों को उनके जन्म लेने से पूर्व ही जानता है :

"तू ही हमारी आवश्यकता है, और हमें अपने-आपको अधिक-से-अधिक देकर तू हमें सब-कुछ दे देता है।"

: २४ :

मौज-बहार

तब एक वैरागी, जो वर्ष में केवल एक बार नगर में आता था, आगे आया और बोला :

हमसे मौज-बहार के विषय में कुछ कहो।

और उसने उत्तर दिया :

मौज-बहार एक मुक्ति-गान है।

लेकिन यह मुक्ति नहीं है।

यह तुम्हारी कामनाओं का फूलना है,

लेकिन यह उनका फल नहीं है।

यह एक गहराई है, जो ऊंचा चढ़ने के लिए पुकारती है,

लेकिन यह स्वयं न गहरी है, न ऊंची।

यह पिंजर-बद्ध का उड़ उठना है,

लेकिन यह परिधि से सीमित दूरी नहीं है।

हां, वास्तव में, मौज-बहार मुक्ति-गान है।

और, मैं चाहता हूं, तुम हृदय की संपूर्णता से इसे गाओ, लेकिन यह नहीं चाहता कि गाने में अपने हृदयों को गंवा दो।

तुममें से कुछ युवक मौज-बहार की इस प्रकार खोज करते फिरते हैं, मानो यही सर्वस्व है, और उनकी टीका तथा निंदा की जाती है।

मैं उनकी न टीका करूंगा, न निंदा। मैं उन्हें मौज-बहार की खोज करने दूंगा।

क्योंकि उन्हें मौज-बहार प्राप्त होगी, परंतु वह अकेली नहीं।

उसकी सात बहनें हैं और उनमें सबसे छोटी भी मौज-बहार से अधिक सुंदर है।

क्या तुमने उस आदमी के बारे में नहीं सुना, जो कुछ जड़ों की खोज में भूमि खोद रहा था और मिल गया एक खजाना ?

और तुममें से कुछ बड़े-बूढ़े मौज-बहार को इस प्रकार पछतावे के साथ याद करते हैं, मानो उन्होंने नशे की हालत में गलतियां की हों।

लेकिन पछतावा मन पर बादलों का घिर आना है, पवित्रीकरण नहीं।

उन्हें अपनी मौज-बहार कृतज्ञता से याद करनी चाहिए, जिस प्रकार वे सुकाल में काटी हुई फसल को याद करते हैं।

फिर भी यदि पछतावे में सुख पाते हैं, तो वे अवश्य यह सुख-लाभ करें।

और तुममें ऐसे भी हैं, जो न तो मौज-बहार की खोज करने योग्य तरुण हैं, न उसकी याद करने योग्य बुड्ढे।

और खोज करने और याद करने के डर से वे सारी मौज-बहार को तिलांजलि दे देते हैं, कि वे कहीं आत्मा की उपेक्षा न

करने लगें या उसके प्रति अपराध न कर बैठें।

लेकिन उनके त्याग में भी उनकी मौज-बहार है।

इस तरह उनके भी हाथ एक खजाना लगता है, यद्यपि वे कांपते हाथों से जड़ों की खोज में खुदाई करते हैं।

लेकिन, मुझे बताओ, वह कौन है जो आत्मा के प्रति अपराध कर सके ?

क्या कोयल रात्रि की निस्तब्धता और जुगनू तारामंडल के प्रति कोई अपराध करते हैं ?

और क्या तुम्हारी ज्योति-शिखा और धुआं क्या पवन के लिए भार-रूप बन सकते हैं ?

क्या तुम समझते हो कि आत्मा एक लहरहीन जल-कुंड है, जिसे तुम लकड़ी से खंखोल सकते हो ?

मौज-बहार को अस्वीकार करके तुम अपने अस्तित्व के अवकाश में वासना का संचय करते रहते हो।

कौन जानता है कि जो आज छोड़ी हुई जान पड़ती है, वही कल प्रतीक्षा कर रही है।

और तुम्हारा शरीर भी अपनी विरासत और उचित आवश्यकताओं से अवगत है और वह धोखा नहीं खा सकता।

और तुम्हारा शरीर तुम्हारी आत्मा का सितार है।

और यह तुम्हारे हाथ की बात है कि तुम उससे मधुर स्वर झंकृत करो या बेसुरी आवाजें निकालो।

और अब जरा अपने हृदय में प्रश्न करो, "मौज-बहार में जो भला है, उसे उससे विलग कैसे करेंगे जो भला नहीं है ?"

अपने खेतों और बागीचों में जाओ, और तुम जान पाओगे

कि मधु-मक्खी की मौज-बहार फूलों से मधु-संचय करने में है।

लेकिन फूलों की भी मौज-बहार मधु-मक्खियों को मधु-दान करने में है।

क्योंकि, मधु-मक्खी के लिए फूल जीवन-स्रोत है।

और फूल के लिए मधु-मक्खी प्रेम की संदेशवाहिका है।

और मधु-मक्खी और फूल दोनों के लिए मौज-बहार का देना और लेना आवश्यकता और परमानंद है।

हे आरफालीजनिवासियो, अपनी मौज-बहार में फूलों और मधु-मक्खियों के समान बनो।

: २५ :

सुंदरता

ग्रौर एक कवि ने कहा :

हमसे सुंदरता के संबंध में कुछ कहो ।

ग्रौर उसने उत्तर दिया :

तुम सुंदरता को कहां खोजोगे, ग्रौर तुम उसे कैसे पाग्रोगे, जबतक कि वह स्वयं ही तुम्हारा पथ ग्रौर तुम्हारी पथ-प्रदर्शिका न बने ?

ग्रौर तुम उसका वर्णन कैसे करोगे, जबतक कि वह स्वयं ही तुम्हारी वाणी को बुननेवाली न बने ?

पीड़ित ग्रौर ग्राहत कहते हैं, "सुंदरता दयालु ग्रौर मृदुल है।

"तरुण माता के समान ग्रपने गौरव पर ग्रर्द्ध-लज्जित वह हमारे बीच विचरण करती है।"

ग्रौर कामी कहते हैं, "नहीं, सुंदरता शक्तिशाली है ग्रौर डरने की वस्तु है।

"वह तूफान की तरह हमारे नीचे की पृथ्वी ग्रौर हमारे ऊपर के ग्राकाश को हिला डालती है।"

थके और परेशान कहते हैं, "सुंदरता कोमल कानाफूंसी की सृष्टि है। वह हमारी आत्मा में बोलती है।

"छाया के भय से कांपनेवाली मंद ज्योति के समान उसकी वाणी हमारी नीरवताओं को आत्म-समर्पण करती है।"

लेकिन बेचैन कहते हैं, "हमने उसे पर्वतों में गरजते सुना है।

"और उसकी गरज के साथ टापों की आवाज, पंखों की फड़फड़ाहट और सिंहों की दहाड़ हमने सुनी है।"

रात में नगर के पहरेदार कहते हैं, "उषा के साथ सुंदरता पूर्व दिशा से उदय होगी।"

और दोपहर में मजदूर और राहगीर कहते हैं, "हमने उसे संध्या के झरोखों से पृथ्वी पर झांकते देखा है।"

शीत-काल में बर्फ से घिरे-हुए कहते हैं, "वह बसंत ऋतु के साथ गिरि-शिखरों पर कूदती हुई आयेगी।"

और ग्रीष्म-काल की गरमी में खेत काटनेवाले कहते हैं, "हमने उसे पतझड़ के पत्तों के साथ नाचते देखा है, और उसके बालों पर हमने बर्फ के कण बिखरे देखे हैं।"

ये सब बातें तुमने सुंदरता के विषय में कही हैं;

लेकिन, वास्तव में, तुमने ये बातें उसके विषय में नहीं, अपनी अतृप्त आकांक्षाओं के विषय में कही हैं।

और सुंदरता आकांक्षा नहीं, परमानंद है।

यह न तो तृषाकुल कंठ है, न याचना के लिए फैला हुआ खाली हाथ;

बल्कि एक प्रज्ज्वलित हृदय और एक मंत्रमुग्ध चित्त।

यह न तो वह प्रतिमा है, जिसे तुम देख सको और न वह गान जिसे तुम सुन सको;

बल्कि एक ऐसी प्रतिमा, जिसे तुम देखते हो यद्यपि तुम अपनी आंखें बंद कर लेते हो और एक ऐसा गान, जिसे तुम सुनते हो यद्यपि अपने कान बंद कर लेते हो

यह न तो कुरेदी हुई छाल का रस है और न नख के साथ जुड़ा हुआ पंख;

बल्कि सदैव फूली रहनेवाली एक वाटिका और सदैव उड़ते रहनेवाले देवदूतों का एक समूह।

आरफालीजनिवासियो, सुंदरता जीवन है—जबकि जीवन अपने पवित्र मुख का अवगुंठन हटा लेता है।

लेकिन तुम जीवन हो और तुम अवगुंठन हो।

सुंदरता, दर्पण में अपने-आपको देखती रहनेवाली अमरता है।

लेकिन तुम ही अमरता हो और तुम ही वह दर्पण हो।

: २६ :

धर्म

और एक बूढ़े पुजारी ने कहा :

हमसे धर्म के संबंध में कुछ कहो।

और उससे कहा :

क्या मैंने आज किसी अन्य के संबंध में कहा है ?

क्या सकल कर्म और चिंतन, और वह जो न कर्म है न चिंतन, बल्कि हृदय में सदैव--उस समय भी जिस समय हाथ पत्थर गढ़ रहे हों या करघा चला रहे हों--प्रस्फुटित होनेवाला आश्चर्य और चमत्कार धर्म नहीं है ?

कौन अपने धर्म को कर्म से और विश्वास को व्यवसाय से अलग कर सकता है ?

कौन अपने क्षणों को अपने सामने यह कहते हुए फैला सकता है, "यह परमात्मा के लिए और यह मेरी काया के लिए ?"

तुम्हारे सारे क्षण स्व-रूप से स्व-रूप तक आकाश में उड़नेवाले पंख हैं।

जो नैतिकता को अपना श्रेष्ठतम वस्त्र मानकर पहनता है, उसे नंगे फिरना श्रेयस्कर है।

पवन और धूप उसके शरीर में छेद नहीं करेंगे।

और जो अपने व्यवहार की नीति-शास्त्र से व्याख्या करता

है, वह अपने गानेवाले पक्षी को पिंजरे में बंदी करता है।

स्वतंत्रता संगीत सीखचों और बंधनों में से नहीं आती।

और वह जिसके लिए पूजा एक खोली जानेवाली और फिर बंद भी की जानेवाली खिड़की है, अभी अपनी आत्मा के भवन में गया ही नहीं है, जिसकी खिड़कियां उषा से उषा[1] तक हैं।

तुम्हारा दैनिक-जीवन तुम्हारा मंदिर और तुम्हारा धर्म है।

जब-जब तुम प्रवेश करो, अपना सब-कुछ साथ ले जाओ—

ले जाओ हल और कुदाली और हथौड़ा और बांसुरी—

वे सब चीजें जिनका निर्माण तुमने अपनी आवश्यकता या प्रसन्नता के लिए किया है।

क्योंकि, ध्यानावस्थित स्थिति में तुम अपनी सफलताओं से ऊपर नहीं उठ सकते, न विफलताओं से नीचे गिर सकते हो।

और अपने साथ सब आदमियों को ले जाओ।

क्योंकि, पूजा में तुम उन लोगों की आशाओं से ऊपर नहीं उठ सकते, न उनकी निराशाओं से अधिक दीन हो सकते हो।

और अगर तुम ईश्वर को जानना चाहते हो, तो पहेलियां हल करनेवाले मत बनो।

बल्कि अपने चारों ओर निगाह डालो, तुम उसे अपने बच्चों के साथ खेलते पाओगे।

और आकाश पर निगाह डालो, तुम उसे बादलों में विचरते, बिजली में बांहे फैलाते और वर्षा की धार में उतरते पाओगे।

तुम उसे फूलों में मुस्कराते और ऊपर उठते और वृक्षों में अपने हाथों को हिलाते देखोगे।

---

[1] आठों पहर।

: २७ :

मृत्यु

तब अल्मित्रा ने कहा:

अब हम मृत्यु के विषय में पूछते हैं।

और उसने कहा:

तुम मृत्यु का भेद जानना चाहते हो;

लेकिन तुम जीवन के अंतर्प्रदेश में खोजे बिना उसे कैसे पाओगे?

वह उलूक, जिसकी रात्रि-सीमित आंखें दिन के लिए अंधी हैं, प्रकाश के रहस्य का पर्दा नहीं हटा सकता।

यदि तुम वास्तव में मृत्यु की आत्मा को देखना चाहते हो, तो जीवन की काया के सामने अपने हृदय को खोलकर रख दो।

क्योंकि जीवन और मृत्यु एक हैं, जैसे नदी और समुद्र भी एक हैं।

तुम्हारी आशाओं और अभिलाषाओं की गहराई में तुम्हारा उस पार[1] का नीरव ज्ञान छिपा है।

और बर्फ से दबे हुए बीज की भांति तुम्हारा हृदय बसंत के

[1] मृत्यु का।

स्वप्न देखता है।

स्वप्नों का विश्वास करो, क्योंकि उनमें अमरता का द्वार छिपा है।

तुम्हारा मृत्यु से डरना गड़रिये के उस राजा के सम्मुख उपस्थित होने में कांपने के समान है, जिसका हाथ उसका सम्मान करने के लिए उसपर पड़नेवाला है।

क्या गड़रिया उस कंपन के अंतर्गत हर्षित नहीं है कि वह राजा का दिया हुआ चिह्न धारण करेगा ?

फिर भी क्या वह अपने कंपन की ओर अधिक ध्यान नहीं देता ?

क्योंकि मरना क्या है—वायु में नंगा होकर खड़ा होना और पिघलकर धूप में समा जाना।

और श्वास-प्रश्वास का बंद होना क्या है—सांस को बेचैन ज्वार-भाटों से मुक्त करना, ताकि वह ऊपर उठे, फैले और भार-हीन होकर ईश्वर को खोजे।

जब तुम नीरवता की नदी का पानी पीयोगे, केवल तब तुम वास्तव में गाओगे।

और जब तुम पर्वत-शिखर पर पहुंच चुकोगे, तब तुम चढ़ना प्रारंभ करोगे।

और जब पृथ्वी तुम्हारे शरीर के सारे अवयवों को अपने में लीन करेगी, तब तुम वास्तव में नाचोगे।

: २८ :

विदा

और अब सांझ हो गई थी।

और ब्रह्मवादिनी अल्मित्रा ने कहा :

मुबारिक हो आज का दिन, यह स्थान और तुम्हारी आत्मा, जिसने अमृत-वाणी का पान कराया।

और उसने कहा :

क्या यह मैं था, जो बोला ?

क्या मैं भी एक श्रोता नहीं था ?

तब वह मंदिर की सीढ़ियों से नीचे उतरा, और सब ने उसका अनुगमन किया। और वह अपने जहाज पर पहुंचा और उसकी छत पर खड़ा हो गया;

और लोगों की ओर फिर मुंह करके, वह ऊंचे स्वर में बोला :

आरफालीज के निवासियो, हवा मुझे तुमसे विदा लेने को कहती है।

मैं जाने के लिए हवा से कम उतावला हूं। फिर भी मुझे जाना ही है।



हम परिव्राजक, अति-एकांत-पथ के चिर-शोधक वहां दूसरा दिन शुरू नहीं करते, जहां हमने एक दिन समाप्त किया था; और कोई सूर्योदय हमें वहां नहीं पाता, जहां सूर्यास्त ने हमें छोड़ा था ।

जिस समय कि पृथ्वी भी सोती है, हम यात्रा करते हैं ।

हम सुदृढ़ विटप के बीज हैं, और जब हम पक जाते हैं तथा हमारे हृदय पूर्ण हो जाते हैं, तब हम वायु के हवाले कर दिये जाते हैं, और बिखरा दिये जाते हैं ।

तुम्हारे बीच मेरे दिन संक्षिप्त थे, और मेरे बोले हुए शब्द और भी संक्षिप्त :

लेकिन यदि मेरी वाणी तुम्हारे कानों में मंद पड़ जायगी और मेरा प्रेम तुम्हारी स्मृति से लुप्त हो जायगा, तब मैं फिर आऊंगा,

और अधिक समृद्ध हृदय से और आत्मा के अधिक आधीन रहनेवाले ओठों से मैं बोलूंगा ।

हां, मैं ज्वार के साथ लौटूंगा ।

और भले ही मृत्यु मुझे ढंक ले, और महामौन मुझे आच्छादित कर ले, फिर भी मैं तुम्हारी बुद्धि की खोज करूंगा ।

और मेरी खोज विफल नहीं होगी ।

यदि जो कुछ मैंने कहा है, वह सत्य है तो, वह सत्य स्पष्टतर वाणी और तुम्हारे विचारों से अधिक-से-अधिक आत्मीयता रखनेवाले शब्दों में अपने-आपको प्रकट करेगा ।

आरफालीज के निवासियो, मैं वायु के साथ जा रहा हूं,

लेकिन नीचे शून्यता में नहीं;

और यदि यह दिन तुम्हारे अभावों और मेरे प्रेम की पूर्णता नहीं है, तो इसे किसी आनेवाले दिन तक एक इक़रार रहने दो।

मनुष्य के अभाव बदलते हैं लेकिन उसका प्रेम नहीं, और न उसकी यह इच्छा कि प्रेम उसके अभावों को संतुष्ट करे।

इसलिए, जान लो कि मैं महामौन से लौटूंगा।

वह कोहरा, जो सूर्योदय के समय खेतों में केवल तुहिन-विंदु छोड़कर बह जाता है, फिर उठेगा और एकत्रित होकर बादल बनेगा और तब वर्षा बनकर नीचे गिरेगा।

और मैं कोहरे से भिन्न प्रकार का नहीं रहा हूं।

रात्रि की निस्तब्धता में मैंने तुम्हारी गलियों में विचरण किया है, और मेरी आत्मा ने तुम्हारे घरों में प्रवेश किया है।

और तुम्हारे हृदय की धड़कनें मेरे हृदय में थीं, और तुम्हारा श्वास-प्रश्वास मेरे मुख पर था, और मैं तुम सबको जानता था।

हां, मैं तुम्हारे आनंद और तुम्हारी वेदना को जानता था, और तुम्हारी निद्रा में तुम्हारे स्वप्न मेरे स्वप्न थे।

और बहुधा मैं तुम्हारे बीच था, मानो पहाड़ों के बीच एक झील।

मैंने तुम्हारे शिखर और टेढ़े-मेढ़े उतार, और तुम्हारे विचारों और तुम्हारी कामनाओं के उड़ते हुए समूह भी प्रति-बिंबित किये थे।

और मेरे मौन में तुम्हारे बच्चों की हँसी झरने बनकर और तुम्हारे नवयुवकों की आकांक्षाएं नदियां बनकर आई थीं।

और जब वे मेरी गहराई में पहुंची थीं, तब भी उन झरनों और नदियों ने गाना बंद नहीं किया था।

बल्कि उल्लासों से अधिक मधुर और आकांक्षाओं से महान् बनकर मेरे पास आये थे।

वह था तुम्हारे अंतर का असीम :

वह विराट पुरुष, जिसमें तुम सब लोग कोश[1] और स्नायु-मात्र हो।

वह, जिसके महागान में तुम्हारा समस्त गान नीरव स्पंदन मात्र है।

उस विराट पुरुष में ही तुम विराट हो,

और उसके दर्शन में मैंने तुम्हारे दर्शन किये और तुम्हें प्यार किया।

क्योंकि ऐसी कौनसी दूरियों तक प्रेम पहुंच सकता है, जो उस विराट क्षेत्र में नहीं हैं ?

कौन-से स्वप्न, कौनसी आशाएं और कौन-सी धारणाएं उस उड़ान से बाजी मार सकती हैं ?

तुम्हारे अंदर का विराट पुरुष विशाल वृक्ष की भांति फल-फूलों से आच्छादित है।

उसकी शक्ति तुम्हें पृथ्वी से बांधती है, उसका सौरभ तुम्हें आकाश में उठाता है और उसकी अक्षयता में तुम मृत्युहीन हो।

तुमसे कहा गया है कि शृंखला होते हुए भी तुम अपनी दुर्बलतम कड़ी के समान दुर्बल हो।

यह कथन अर्द्ध-सत्य मात्र है। तुम अपनी दृढ़तम कड़ी के समान दृढ़ भी हो।

तुम्हारे तुच्छतम कार्य से तुम्हारी माप करना, समुद्र की

---

[1] कोश (cell), जिनसे मिलकर प्राणिमात्र का शरीर बनता है।

शक्ति की माप उसके फेन की अल्पता से करना है ।

तुम्हारी विफलताओं के आधार पर तुम्हारे विषय में राय बनाना, ऋतुओं को उनकी परिवर्तनशीलता के लिए दोष देना है ।

हां, तुम एक महासिंधु के समान हो,

और यद्यपि भार से लदे हुए जहाज तुम्हारे तटों पर ज्वार की प्रतीक्षा करते हैं, फिर भी, समुद्र के समान, तुम अपने ज्वारों को जल्दी नहीं बुला सकते ।

और तुम ऋतुओं के समान भी हो,

और यद्यपि तुम अपने शिशिर में अपने वसंत को अस्वीकार करते हो,

फिर भी तुम्हारे अंतर में आराम करनेवाला वसंत नींद की खुमारी में मुस्करा रहा है, और अपमान का अनुभव नहीं करता ।

यह मत सोचो कि यह सब मैं इसलिए कह रहा हूं कि बाद में तुम एक-दूसरे से कहो, "उसने हमारी खूब प्रशंसा की । उसने हममें भलाई मात्र ही देखी ।"

मैं वही, शब्दों में केवल कह रहा हूं, जो तुम्हारे विचार में तुम स्वयं जानते हो ।

और शाब्दिक ज्ञान क्या है—शब्दरहित ज्ञान की छाया मात्र ही तो ।

तुम्हारे विचार और मेरी वाणी एक मोहर-बंद याददाश्त की लहरें हैं,

जो तुम्हारे बीते हुए कलों का, और उन प्राचीन दिवसों का,

जब पृथ्वी को न अपना न हमारा ज्ञान था, और उन रात्रियों का, जब उथल-पुथल में से पृथ्वी का उदय हुआ था, लेखा रखती हैं।

ज्ञानी पुरुष तुम्हें अपने ज्ञान में से कुछ देने आये हैं। मैं तुम्हारे ज्ञान में से कुछ लेने आया था :

और देखो मैंने वह पाया है, जो ज्ञान से बढ़कर है।

वह है तुम्हारे अंतर में स्व-जीवन को सदैव अधिकाधिक संचित करनेवाली चैतन्य-ज्योति,

जबकि तुम उसके विस्तार पर ध्यान न देकर, अपने झड़नेवाले दिनों के लिए शोक करते हो।

शरीरों में जीवन की खोज करनेवाला जीवन कब्र से डरता है।

यहां कब्रें हैं ही नहीं।

ये पहाड़ और मैदान एक पालना और एक सीढ़ी हैं।

जब कभी तुम उस खेत में होकर गुजरो, जहां तुम्हारे पूर्वज दफनाये गये थे--तो वहां ध्यान दो, तुम देखोगे कि वहां तुम और तुम्हारे बच्चे हाथ-में-हाथ लिये नृत्य कर रहे हैं।

निश्चय ही तुम बहुधा अनजाने ही खुशियां मनाते हो।

तुम्हारे पास और दूसरे आये हैं, जिन्हें तुमने तुम्हारी श्रद्धा को स्वर्ण-आशाएं बंधाने के बदले धन, सत्ता और कीर्त्ति दी है।

मैंने तुम्हें आशा से भी कम दिया है, और फिर भी तुम मेरे प्रति अधिक उदार रहे हो।

तुमने मुझे जीवन के प्रति मेरी उत्कट पिपासा प्रदान की है।

वास्तव में किसी व्यक्ति के लिए इससे महान भेंट नहीं हो सकती, जो कि उसकी सारी आकांक्षाओं को पिपासित ओठ और सारे जीवन को एक अविरल स्रोत में परिवर्तित कर दे।

और इसमें मेरा सम्मान और मेरा पुरस्कार निहित है कि—

जब कभी मैं स्रोत पर पीने के लिए आता हूं, तो मैं स्वयं चेतन-जल को प्यासा पाता हूं;

और जबकि मैं उसका पान करता हूं, वह मेरा पान करता है।

तुममें से कुछने मुझे भेंट स्वीकार करने में अभिमानी और अत्याधिक लज्जाशील समझा है।

मज़दूरी लेने में मैं अवश्य अत्यंत मानी हूं, लेकिन भेंट लेने में नहीं।

और जब तुम मुझे अपने साथ बैठाकर भोजन कराना चाहते थे, मैंने पहाड़ियों पर बेर खाये हैं,

और जबकि तुम खुशी-खुशी मुझे आश्रय देना चाहते थे, मैं किसी मंदिर के दालान में सोया हूं,

किंतु, क्या यह मेरे दिवस और मेरी रात्रि के प्रति तुम्हारी स्नेहपूर्ण चिंता नहीं थी, जो मेरे मुख में भोजन को सुमधुर बनाती और मेरी निद्रा को मधुर स्वप्न प्रदान करती थी ?

इसके लिए मैं तुम्हें बहुत-बहुत आशीर्वाद देता हूं।

तुम बहुत देते हो, और यह नहीं जानते कि कुछ देते भी हो।

वस्तुतः जो सहृदयता दर्पण में अपना मुख निरखती है, पत्थर बन जाती है।

और सत्क्रिया जो अपनेको सुंदर नामों से संबोधित करती है, अभिशाप की जननी बन जाती है।

और तुममें से कुछने मुझे एकांत प्रिय और अपनी ही एकांतता में मदहोश कहा है,

और तुमने कहा है, "वह वन-वृक्षों से वार्तालाप करता है, लेकिन मनुष्यों से नहीं;

"वह टेकरी के शिखर पर अकेला बैठता है और हमारे नगर को नीची नजर से देखता है।"

और यह सत्य है कि मैं पर्वतों के शिखरों पर चढ़ा हूं और मैंने दूर देशों में विचरण किया है।

खूब ऊपर चढ़े बिना, या काफी दूर गये बिना मैं तुम्हें देख कैसे पाता ?

दूर हुए बिना कोई वास्तव में समीप हो ही कैसे सकता है ?

और तुममें से दूसरों ने शब्दों के बिना मुझसे कहा है :

"ओ अजनवी, अगम्य शिखरों के प्रेमी, तुम उन ऊंचाइयों में क्यों रहते हो, जहां गरुड़ अपना नीड़ बनाते हैं ?

"तुम अप्राप्य की तलाश क्यों करते हो ?

"किन तूफानों को तुम अपने जाल में फंसाना चाहते हो ?

"और किन पवन-पक्षियों का तुम आकाश में शिकार करना चाहते हो ?

"आओ और हममें से एक बनो।

"नीचे उतरो और हमारी रोटियों से अपनी भूख मिटाओ और हमारी मदिरा से अपनी प्यास शांत करो।"

अपने हृदय के एकांत वास में उन्होंने ये बातें कहीं थीं;

लेकिन यदि उनका एकांत और अधिक गहरा होता, तो उन्हें मालूम होता कि मैं तुम्हारे हर्ष और शोक के रहस्य-मात्र को खोज रहा था,

और आकाश में विचरण करनेवाले तुम्हारे विराट स्वरूपों का शिकार कर रहा था।

लेकिन शिकारी शिकार भी था;

क्योंकि, मेरे कितने ही बाण मेरे ही हृदय की खोज में मेरे धनुष से छूटे थे।

और उड़नेवाला, रेंगनेवाला भी था;

क्योंकि, जब मेरे पंख धूप में फैलते थे, पृथ्वी पर उनकी छाया कछुए की तरह रेंगती थी।

और मैं विश्वासी, अविश्वासी भी था;

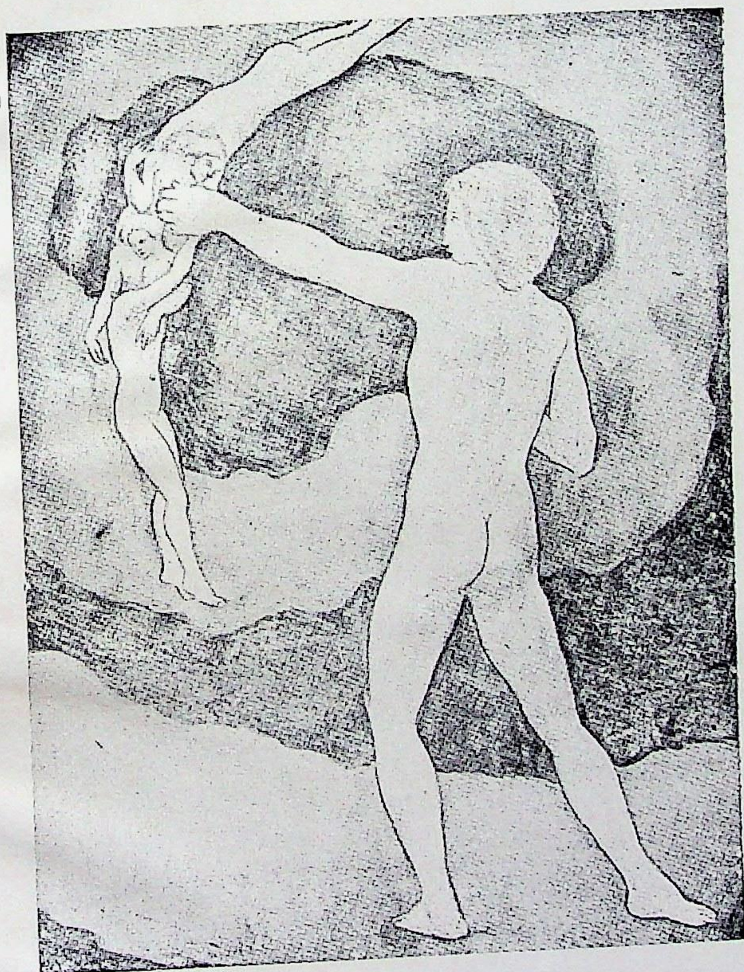
क्योंकि प्राय: मैंने अपने ही घाव में अपनी अंगुली डाली है, ताकि मैं तुममें अधिक विश्वास कर सकूं और तुम्हारा अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकूं।

और इस विश्वास और इस ज्ञान के बल पर मैं कहता हूं—

तुम अपनी देह में बंद नहीं हो, न घरों और खेतों से सीमित हो।

'तुम' जो है, वह पर्वतों से ऊपर निवास करता है और वायु के साथ भ्रमण करता है।

यह वह नहीं है, जो गरमी के लिए धूप में रेंगता है और बचाव के लिए अंधेरे में बिल खोदता है,



बल्कि एक वस्तु है--मुक्त, एक चेतना, जो पृथ्वी को आच्छादित करती है और आकाश-वायु में विचरण करती है।

यदि ये अस्पष्ट शब्द हों, तो उन्हें स्पष्ट करने की चेष्टा न करना।

स्पष्टता और धुंधलापन सब वस्तुओं का आदि है, उनका अंत नहीं,

और मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम मुझे आदि के समान ही याद रखो।

जीवन और जीवमात्र का गर्भाधान अंधियारे में ही होता है, उजाले में नहीं।

और कौन जाने उजाले की जीर्णवस्था का ही नाम अंधियारा हो ?

मैं चाहता हूं कि मुझे याद रखने में तुम यह याद रखो :

तुम्हारे अंदर जो सबसे अधिक निर्बल और घबराया हुआ जान पड़े, वह सबसे अधिक वलवान और दृढ़ है।

क्या यह तुम्हारी श्वास नहीं है जिसने तुम्हारी हड्डियों के ढांचे की रचना की है और उसे मजबूत बनाया है ?

और क्या यह एक स्वप्न नहीं है, जिसे देखा है। इसकी याद भी तुममें से किसीको नहीं है, जिसने तुम्हारे नगर और उसमें जो कुछ है, उस सबका सृजन किया है ?

यदि तुम उस श्वास की तरंगें देख-भर सको, तो तुम शेष सब-कुछ देखना बंद कर दोगे,

और यदि तुम उस स्वप्न की कानाफूंसी सुन सको, तो तुम कोई दूसरी आवाज नहीं सुनोगे।

किंतु, तुम न देखते हो, न सुनते ही हो और यह अच्छा है।

तुम्हारी आंखों पर पड़ा हुआ पर्दा उन हाथों से हटेगा, जिन्होंने उसे बुना था,

और वह मिट्टी, जो तुम्हारे कानों में भरी हुई है, उन अंगुलियों से छेदी जायगी जिन्होंने उसे साना था।

और तुम देखोगे।

और तुम सुनोगे।

फिर भी तुम न अपने अबतक अंधे रहने पर दुखी होगे और न बहरे रहने पर खेद करोगे।

क्योंकि, उसी दिन तुम सब वस्तुओं के भीतर किये प्रयोजनों को जान जाओगे,

और तुम अंधकार को उसी प्रकार आशीर्वाद दोगे, जिस प्रकार प्रकाश को।

ये बातें कहने के उपरांत उसने अपने चारों ओर दृष्टि डाली और देखा कि उसके जहाज का चालक अपनी पतवार संभाले कभी खुले पालों की ओर और कभी सुदूर मार्ग की ओर देख रहा है।

और उसने कहा :

मेरे जहाज का कप्तान धैर्यवान--अतिशय धैर्यवान--है।

पवन चल रहा है, और पाल बेचैन है;

पतवार भी आज्ञा मांगती है;

फिर भी मेरा कप्तान चुपचाप मेरे मौन की राह देख रहा है।

और ये मेरे मल्लाह, जिन्होंने महासागर का समूह-गान

सुना है, ध्यानपूर्वक मेरी बातें सुनते रहे हैं।

अब वे अधिक प्रतीक्षा नहीं करेंगे।

मैं तैयार हूं।

नदी समुद्र में पहुंच गई है, और एक बार पुनः महती माता अपने बालक को अपने वक्ष:स्थल से लगा रही है।

अलविदा, आरफालीज के निवासियो।

यह दिन पूरा हो गया है!

यह उसी प्रकार मुंद रहा है, जिस प्रकार कमल अपने आने-वाले कल के लिए मुंदता है।

हमें जो कुछ आज यहां मिला है, उसे हम अपने पास रखेंगे।

और अगर वह यथेष्ट न होगा, तो हम सबको फिर साथ आना पड़ेगा और दाता के सामने साथ हाथ फैलाने पड़ेंगे।

भूल मत जाना कि मैं तुम्हारे पास वापस आऊंगा।

कुछ ही समय उपरांत मेरी इच्छा दूसरे शरीर के लिए मिट्टी और पानी जमा करेगी।

और कुछ ही समय उपरांत, वायु पर एक क्षण विश्राम कर लेने पर, कोई दूसरी माता मुझे धारण करेगी।

विदा तुमसे और उस तारुण्य से, जो मैंने तुम्हारे साथ बिताया है।

यह तो कल ही हम स्वप्न में मिले थे।

तुमने मेरे एकांत में मेरे लिए गाया है, और मैंने आकाश में तुम्हारी आकांक्षाओं की मीनार निर्मित की है।

किंतु, अब हमारी नींद उड़ चुकी है, हमारा स्वप्न समाप्त हो चुका है, और अब प्रभात भी नहीं है।

मध्याह्न हमारे ऊपर है, और हमारी अर्द्ध जागृति पूर्ण

दिवस बन चुकी है; और हमें अलग होना ही चाहिए।

और यदि स्मृति के संध्याकाल में हम फिर कभी मिले, तो हम अधिक बातें करेंगे और तुम मेरे लिए गूढ़तर गीत गाओगे।

और जब हमारे हाथ किसी दूसरे स्वप्न में मिलेंगे, तब हम आकाश में एक और मीनार निर्मित करेंगे।

इतना कहकर उसने मल्लाहों को इशारा किया और उन्होंने तुरंत लंगर उठा लिये और जहाज को खोल दिया, और पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान किया।

और उन लोगों के हृदय से एक चीख इस प्रकार निकली, मानो एक ही हृदय से निकली हो, और संध्या के धुंधलेपन में उठी और एक महान दुंदुभि-निनाद के समान समुद्र के ऊपर से ले जाई गई।

केवल अल्मित्रा, जबतक जहाज कोहरे में छिप नहीं गया, उसे एकटक देखते हुए, चुप थी।

और जब सब लोग बिखर चुके थे, तब भी वह उसके इस कथन को अपने हृदय में याद करती हुई, समुद्र-तट पर अकेली खड़ी थी:

"और, कुछ ही समय उपरांत, वायु पर एक क्षण विश्राम कर लेने पर, कोई दूसरी माता मुझे धारण करेगी।"

मंडल द्वारा प्रकाशित

खलील जिब्रान का साहित्य

□□

- विद्रोही आत्माएं
- पागल
- बटोही
- तूफान
- शैतान
- आंसू और मुस्कान
- धरती के देवता
- हीरे और मोती
- जीवन-संदेश